 ੴ सतिगुर प्रसादि ॥ 

गुर गिआन अंजन सचु नेत्री पाइआ ॥
अंतरि चानणु अगिआनु अंधेरु गवाइआ ॥

मासिक

गुरमति ज्ञान

ज्येष्ठ-आषाढ़, संवत् नानकशाही ५४५
वर्ष ६ अंक ९ जून 2013

संपादक : सिमरजीत सिंघ एम. ए., एम. एम. सी.
सहायक संपादक : जगजीत सिंघ

चंदा

सालाना (देश)	१० रुपये
आजीवन (देश)	१०० रुपये
सालाना (विदेश)	२५० रुपये
प्रति कापी	३ रुपये

चंदा भेजने का पता
सचिव, धर्म प्रचार कमेटी
(शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी)
श्री अमृतसर-१४३००६
फोन: 0183-2553956-60



एक्सटेंशन नंबर
वितरण विभाग **303** संपादकीय विभाग **304**
फैक्स: 0183-2553919
e-mail : gyan_gurmat@yahoo.com
website : www.sgpc.net

विषय-सूची

गुरबाणी विचार

किरपा करहु दीन के दाते मेरा गुणु अवगणु न बीचारहु कोई ॥
माटी का किआ धोपै सुआमी माणस की गति एही ॥१॥
मेरे मन सतिगुरु सेवि सुखु होई ॥
जो इछहु सोई फलु पावहु फिरि दूखु न विआपै कोई ॥१॥ रहाउ ॥
काचे भाडे साजि निवाजे अंतरि जोति समाई ॥
जैसा लिखतु लिखिआ धुरि करतै हम तैसी किरति कमाई ॥२॥
मनु तनु थापि कीआ सभु अपना एहो आवण जाणा ॥
जिनि दीआ सो चिति न आवै मोहि अंधु लपटाणा ॥३॥
जिनि कीआ सोई प्रभु जाणै हरि का महलु अपारा ॥
भगति करी हरि के गुण गावा नानक दासु तुमारा ॥४॥ *(पन्ना ८८२)*

रामकली राग में उच्चारण किए गए उपरोक्त शबद में श्री गुरु अरजन देव जी खुद को आम इंसान की भांति पात्र रूप में प्रस्तुत करते हुए फरमान करते हैं कि हे दीन के दाते प्रभु! मुझ पर कृपा करो; मेरे किसी भी गुण-अवगुण की विचार न करो। जिस प्रकार मिट्टी को पानी से चाहे कितनी भी बार धो लिया जाए मगर उसका मैलापन नहीं जाता, यही दशा मानस की है अर्थात् मानस के मन में जो मैल जमी हुई है वो बाहरी (शारीरिक) स्नान-मात्र से उतरने वाली नहीं, केवल परमात्मा की कृपा द्वारा, उसका नाम-सिमरन करने से ही दूर हो सकती है। हे मेरे मन! सतिगुरु की शरण में रह, क्योंकि सतिगुरु की शरण में जाने से ही आनंद की प्राप्ति होती है। सतिगुरु की शरण में जाने से मन-इच्छित (आध्यात्मिक) फल की प्राप्ति होती है, फिर कोई (दुनियावी) दुख नहीं लगता। गुरु जी का आगे फरमान है कि प्रभु ने ये कच्चे बर्तन रूपी शरीर बनाकर इनमें अपनी ज्योति, शक्ति टिकाई हुई है। प्रभु ने (कर्मों के अनुसार) मनुष्य के (अंदर) जो लेख लिख दिए हैं उसी के अनुसार वह कर्म किए जाता है। मनुष्य अपने मन को, अपने तन को सदा स्थिर मान बैठता है अर्थात् वो मृत्यु भूल जाता है, प्रभु-नाम भूल जाता है, जिससे वो जन्म-मरण के चक्कर में फंसा रहता है। जिस परमात्मा ने तन दिया, जीवन दिया, मनुष्य उसी को भुला बैठता है, उसे याद नहीं करता और (आध्यात्मिक नज़रों से) अंधा होकर शरीर को बचाए रखने के मोह में फंसा रहता है। जिस परमात्मा ने यह जगत-रचना की है, इसे चलाना भी वो खुद ही जानता है। उसका ठिकाना आम मनुष्य की पहुंच से बाहर है अर्थात् उसकी रमज़ को समझ पाना आम मनुष्य के वश की बात नहीं। अंतिम पंक्ति में गुरु जी कह रहे हैं कि सभी जीव प्रभु के आगे यही अरदास किया करें कि हे प्रभु! मैं तेरा दास हूं, मैं तेरी ही भक्ति करता रहूं और हर दम तेरे ही गुणों का गुणगान करता रहूं अर्थात् श्वास-श्वास प्रभु-सिमरन की याचना के लिए उसके आगे विनती करते रहना चाहिए।





इंसाफ का इंतजार करते-करते चल बसे. . .

नवंबर, १९८४, बहुत ही प्रकोप के दिन थे, जब भारत के दिल्ली तथा अन्य बड़े-बड़े शहरों के गली-मुहल्लों में से इंसानी चीखें कान के पर्दे फाड़ रही थीं, घरों में लगी आग की लपटें आसमान को छू रही थीं; नारे गूंज रहे थे :

"खून का बदला खून से लेंगे!"

"सरदारों को जला दो! लूट लो! सरदारों को मार दो!"

इन नारों की आवाज़ से कान के पर्दे फट रहे थे। यह सारा खूनी साका ३१ अक्तूबर, १९८४ ई को उस समय घटित हुआ जब दो सिक्ख नौजवानों--- स. बेअंत सिंघ एवं स. सतवंत सिंघ ने जून, १९८४ ई में श्री अकाल तख़्त साहिब पर किए गए आक्रमण का बदला लेने के लिए भारत की प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी को सुबह ९:१८ बजे गोली मारकर कत्ल कर दिया था। उसको ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस्ज़, दिल्ली में ले जाया गया था। चारों ओर हाहाकार मच गयी थी। इंदिरा गांधी का पुत्र राजीव गांधी उस समय बंगाल में गया हुआ था। पता चलने पर वो शाम ४:०० बजे दिल्ली पहुंच गया था। उस समय के राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंघ शाम ५:०० बजे तक अपना दौरा बीच में ही छोड़कर दिल्ली पहुंच गए थे और उन्होंने आते ही सबसे पहले शाम ६:५५ बजे राजीव गांधी को भारत का प्रधानमंत्री घोषित कर दिया था।

उस समय देश-विदेश के मीडिया की नज़रें उन दो सिक्खों पर लगी हुई थीं, जिन्होंने इंदिरा गांधी का कत्ल किया था, जबकि दूसरी तरफ पंजाब से बाहर रहते सिक्खों के लिए यह ख़बर मृत्यु का भयानक जंज़ाल बनी हुई थी।

३१ अक्तूबर, १९८४ ई को सिक्खों की मार-पीट की घटनाएं सबसे पहले कोलकाता में शुरू हुईं। १ नवंबर के 'स्टेट्समैन' अख़बार के अनुसार एक सिक्ख को सुबह ११:०० बजे राईटर बिल्डिंग के पास पीटा गया। एक अन्य सिक्ख, जो टी-बोर्ड के कार्यालय के आगे खड़ा था, उस पर दोपहर १:३० बजे पर हमला किया गया। नेशनल प्रेस ने रिपोर्ट की कि कांग्रेस (आई) के वर्कर तथा वलंटियर दोपहर के बाद कोलकाता के अलग-अलग इलाकों में भगदड़ मचाने लग गए हैं, जिस पर स्थिति से निपटने के लिए फौज को बुला लिया गया तथा दोपहर २:३० बजे के लगभग फौज ने शहर का प्रबंध अपने हाथों में ले लिया।

मद्रास में भी सिक्खों की दुकानों की खिड़कियां तोड़ दी गईं और दुकानदारों से जबरदस्ती दुकानें बंद करवा दी गईं। पंजाब एसोसिएशन द्वारा चालित स्कूल की दो बसों को आग लगाकर जला दिया गया। उत्तर प्रदेश में भी लूट-खसूट की घटनाओं को आँखों से देखने वालों के अनुसार विशेषत: कानपुर में इंदिरा गांधी के समर्थकों का भारी इकट्ठ गलियों में इकट्ठा हो गया था। दुकानें बंद हो गई थीं और चारों तरफ भगदड़ मच गई थी। मध्य प्रदेश के जबलपुर तथा इंदौर

के सिक्खों की दुकानों और पेट्रोल पंपों को आग लगा दी गई तथा भारी मात्रा में इंदिरा गांधी के समर्थकों ने सिक्खों पर हमला कर दिया, जिस कारण फौज को सूचित करना पड़ा। उड़ीसा में गांधी समर्थकों ने भुवनेश्वर के सिक्खों पर हमला करके उनके ट्रकों को आग लगा दी।

दिल्ली में सिक्ख कत्लेआम ३१ अक्तूबर, १९८४ ई को दोपहर के बाद ही शुरू हो गया था, जबकि दिल्ली में ज्यादातर सिक्ख कांग्रेस (आई) के हिमायती थे और इनमें से बहुत सारे ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसज़ में सुबह से ही दुख का प्रकटावा करने के लिए पहुंचे हुए थे। यहां तक कि अस्पताल में खड़ी राष्ट्रपति ज्ञानी ज़ैल सिंघ की कार पर भी पथराव किया गया। सिक्खों को बसों से उतारकर पीटा गया, मारा गया। शाम के ४:०० बजे तक कुछ दुकानों को लूट लिया गया और कुछ को आग लगा दी गई। शाम के ४:०० बजे के लगभग आई एन. मार्केट के बाहर एक सिक्ख नौजवान की पगड़ी ३०-३५ लोगों ने उतारकर फाड़ दी। उन्होंने सिक्खों की मार-धाड़ शुरू कर दी। यह हमलावरों का अच्छा दल बन गया था जो सफ़दरगंज हवाई अड्डे की तरफ निकल पड़ा। फ्लाईओवर के पास उन्होंने एक सिक्ख को कार में जाते हुए देखा तो उन्होंने कार को रोक लिया। उस सिक्ख को घसीटकर कार से खींच लिया और उसकी कार तोड़ दी; उसे खींचा-घसीटा गया, उसे गालियां निकालीं। वह सिक्ख किसी तरह से जान बचाकर निकल गया और हमलावरों का काफिला शोरगुल करता हुआ आगे चला गया। रास्ते में एक डाक गाड़ी मिली जिसको एक सिक्ख ड्राईवर चला रहा था। उसको सफ़दरगंज के पास आग लगा दी गई। गुरुद्वारा सिंघ सभा, लक्ष्मीबाई नगर तथा गुरुद्वारा कदवई नगर आग लगाकर बुरी तरह से जला दिए गए थे। इसी क्षेत्र की दो प्राईवेट बसों एवं दुकानों को लूटकर आग लगा दी गई। पुलिस खड़ी तमाशा देख रही थी। सिक्खों की दुकानों को लूटा जा रहा था। लकड़ी की दुकानों और ट्रकों को आग लगाई जा रही थी। शाम तक शंकर मार्केट, पंच कुआं रोड, करोल बाग, सिरोजनी नगर तथा अन्य बहुत सारे इलाकों की इमारतें बुरी तरह जल रही थीं और लूटी जा चुकी थीं।

३१ अक्तूबर को ५:०० बजे लगभग अस्पताल में राजीव गांधी अपनी मां की मृत देह के पास आया तो उसने गुस्से में मुट्ठियां भींची हुई थीं। एच. के. एल. भगत भी उसके साथ था। एक भारी इकट्ठ "इंदिरा गांधी अमर रहे!" के नारे लगा रहा था और ऊंची-ऊंची कह रहा था, "खून का बदला खून से लेंगे!" रिपोर्ट ऑफ नेशन ट्रुथ अबाउट दिल्ली वायलेंस के अनुसार, 'भगत' बाहर आया और उसने लोगों के इकट्ठ को संबोधित करते हुए कहा, "आप इस जगह पर खाली नारे लगाकर प्रार्थना ही करते रहोगे?"

बस, फिर क्या था, सैकड़ों गुरुद्वारा साहिब अग्नि की भेंट चढ़ा दिए गए। गुरुद्वारा रकाबगंज साहिब और चांदनी चौंक पर भी हमला किया गया। कुछ सिक्खों के साथ रेलवे स्टेशन पर भी खींचातानी की गयी और उन पर पथराव भी किया गया।

मार-धाड़ करने के लिए बाहरी इलाकों से किराए के हमलावरों को लाया गया था, जिनको सिक्खों का कत्ल करने का एक-एक हज़ार रुपया तथा शराब दी गयी। सिटीजन कमीशन के एस. एम. सीकरी (भारत के रिटायर जज) ने अपनी रिपोर्ट में बताया था कि ४ नवंबर तक

दिल्ली में देश के कानून की उल्लंघना करते हुए किस प्रकार तोड़-फोड़ की गई। इसमें उन्होंने बहुसंख्यक द्वारा पीड़ितों के साथ कानून की उल्लंघना, तोड़-फोड़, कत्ल और बलात्कारों की बात की थी। उन्होंने राहत कार्यों में लगे हुए लोगों के साथ भी बात की थी। उन्होंने अपने तजुर्बे के अनुसार तुरंत रिपोर्ट तैयार करके सरकार को भेजी, जिसमें उन्होंने कहा था कि ऐसे व्यक्तियों को, जो कत्लेआम कर रहे थे, किसी भी कीमत पर माफ नहीं किया जाना चाहिए। इनमें से कुछ को पुलिस ने पकड़ लिया था, मगर बाद में ज़मानत पर रिहा कर दिया था, जो इलाके में जाकर फिर से दहशत फैलाने लगे थे। श्री सीकरी ने अपनी रिपोर्ट की प्रतिलिपि प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति को भेजी थी, परंतु आज तक इस पर कोई कार्यवाही नहीं हो सकी और न ही किसी हमलावर को सज़ा हुई है। कमीशन अवश्य बनते रहे और रिपोर्टें भी बनती रहीं, इनसे केवल कार्यालयों की फाईलें ही मोटी हुई हैं, अन्य कोई ठोस परिणाम नहीं निकला।

सिक्ख कत्लेआम की जांच कर रहे नानावती कमीशन के आगे विश्व-प्रसिद्ध जर्नलिस्ट स. खुशवंत सिंघ ने भी अपने बयान दर्ज करवाए थे, जिनके अनुसार ३१ अक्तूबर तथा १ नवंबर को हुए सिक्ख कत्लेआम से जो उनकी भावनायें दर्दनाक रूप से जख़्मी हुई हैं, उनके दाग वे सारी उम्र महसूस करते रहेंगे। उनके अनुसार उन्होंने अपनी आँखों से देखा कि ३१ अक्तूबर, १९८४ ई की दोपहर को कनॉट सर्कल में से काले धुएं का एक घना बादल उभर रहा था। उस इलाके में सिक्खों की जायदादों को आग लगा दी गई थी। शाम को उन्होंने देखा कि अंबेसडर होटल के बाहर सिक्खों की टैक्सियों को गुंडों ने तोड़-फोड़ दिया था। खान मार्केट में स्थित सिक्खों की दुकानें लूटी गई थीं। उन्होंने वहां सामने सड़क पर एक अफ़सर के अधीन दो लाइनों में पुलिस कर्मचारियों को खड़ा देखा था, जोकि हथियारबंद थे। वे खामोश खड़े तमाशबीन की तरह लूट-मार देख रहे थे। आधी रात को "खून का बदला खून से लेंगे" के नारे गूंजने लग गए। उन्होंने अपनी बगीचे की चारदीवारी से देखा कि एक ट्रक में से लाठियां तथा मिट्टी के तेल की पीपियां उतारी जा रही थीं। उस ट्रक में बहुत सारे आदमी भी थे। इन लोगों ने सुजान सिंघ पार्क के गुरुद्वारा साहिब पर हमला कर दिया। एक सिक्ख मकैनिक की दुकान में मुरम्मत के लिए आई कारों को भी आग लगा दी।

नवंबर, १९८४ में दिल्ली में जो कुछ हुआ वह अचानक नहीं था, बल्कि सोच-समझकर किया गया था। ये हिंदू-सिक्ख सांप्रदायिक दंगे नहीं थे, बल्कि बहुत से इलाकों में तो हिंदू भाइयों ने अपने सिक्ख पड़ोसियों के बचाव के लिए यत्न भी किए। इसी तरह पंजाब में भी सिक्खों ने बदले की भावना से कुछ नहीं किया। इसलिए शक की उंगली सीधी एक ही पार्टी की तरफ उठती है जिसने संकेत दिया था कि "सिक्खों को सबक सिखा दो" तथा पुलिस को यह हुक्म दिया था कि "जब वे सिक्खों को सबक सिखा रहे हों, तब किसी तरह का हस्तक्षेप न किया जाए।"

नवंबर, १९८४ में हुई घटनाओं की जांच के लिए अब तक बहुत सारे सरकारी एवं गैर-सरकारी कमीशन बनाये जा चुके हैं। इस विषय पर किताबें भी लिखी जा चुकी हैं। गैर-सरकारी कमीशनों में हमारे देश के कई उच्च कोटि के कानूनदान भी शामिल रहे हैं, जिनमें जस्टिस तारकुंडे, डॉ. कुठारी तथा सुप्रीम कोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश एस. एम. सीकरी जैसों के नाम विशेष

हैं। इन कानूनदानों ने अपनी रिपोर्टों में जहां सिक्ख कत्लेआम की डटकर आलोचना की है, वहीं उन्होंने बहुत सारे तत्कालीन संसद सदस्यों पर भी कातिलों को भड़काने के दोष लगाए हैं। इन कानूनदानों ने कहा कि कई संसद सदस्यों ने निर्दोष तथा अति अल्पसंख्यक कौम के खिलाफ हिंसा भड़काई थी, जो कभी भी हिंदू भाईचारे के साथ अपने सम्बंधों को लेकर स्वयं को असुरक्षित महसूस नहीं करते थे। सरकारी कमीशनों ने दिल्ली में लगभग ३५०० से ज्यादा तथा उत्तरी भारत के अन्य शहरों में १०,००० निर्दोष सिक्खों के कत्लेआम के दोषों से कातिलों को मुक्त कर दिया। यह विशाल स्तर पर किया गया एक बड़ा अपराध था जिसके लिए सैकड़ों अपराधियों को फांसी पर चढ़ा देना चाहिए था।

आश्चर्य की बात यह है कि सरेआम कत्ल करने वाले व्यक्तियों को अभी तक सज़ा ही नहीं दी गई, जबकि इंदिरा गांधी को कत्ल करने वाले---स. बेअंत सिंघ तथा स. सतवंत सिंघ के साथ भाई केहर सिंघ को भी सज़ा सुनाकर फांसी पर लटका दिया गया। फिर एक ही देश में दो कानून क्यों? क्यों नहीं लटकाया जा रहा फांसी पर सिक्खों के कातिलों को?

३० अप्रैल, २०१३ को दिल्ली की कड़कड़डूमा अदालत ने भूतपूर्व सांसद सज्जन कुमार को सिक्ख नसलकुशी के दोष से बरी कर दिया। इसके ऊपर सन् १९८४ ई में पांच सिक्खों को बेरहमी से कत्ल करने का दोष है। सज्जन कुमार को इस कत्ल-कांड का कथित मुख्य दोषी समझा जाता है। सज्जन कुमार के खिलाफ इस मामले में नानावती कमीशन की सिफारिश के आधार पर २००५ ई में केस दर्ज किया गया था। दिल्ली कैंट के इस मामले के अलावा सज्जन कुमार पर सुलतानपुरी तथा नंगलोई में हुए सिक्ख कत्लेआम का भी दोष है। इस अवसर पर सरकार द्वारा इस बात की पुष्टि की गई कि १९८४ ई में हुए सिक्ख कत्लेआम में गिरफ्तार किए गए ३१६३ लोगों में से केवल ४२२ लोगों को ही दोषी करार दिया जा सका है, बाकी सभी राजसी प्रभाव के कारण दोष-मुक्त हो चुके हैं :

इस अदालत 'च बंदे बिरख हो गए,
फैसले सुणदिआं सुणदिआं सुक्क गए,
आखो इन्हां नूं, उजड़े घरीं जाण हुण,
इह कदों तीक इथे खड़े रहिणगे? *(सुरजीत पातर)*

२९ वर्ष बीत जाने के बाद भी दोषी अज़ादी से घूम रहे हैं तथा पीड़ित परिवार इंसाफ के लिए कचहरियों में धक्के खा रहे हैं। 

गुरमति संगीत का संसार और श्री गुरु अरजन देव जी का योगदान

*- श्री दिनेश वर्मा**

श्री गुरु अरजन देव जी के जीवन, व्यक्तित्व की सबसे बड़ी उपलब्धि श्री अमृतसर में श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना मानी जाती है, जो कि आगे चलकर गुरमति-संगीत के वैश्विक विकास में एक बहुत बड़ा माध्यम या साधन सिद्ध हुई। इतना ही नहीं, श्री गुरु ग्रंथ साहिब के संपादन द्वारा भी गुरु जी ने भारतीय संगीत की रागात्मकता के विविध आयामों को विशेष रूप से विकसित करने में एक महती भूमिका सम्पन्न की है। श्री गुरु अरजन देव जी ने सर्वप्रथम श्री गुरु नानक देव जी द्वारा प्राप्त सांगीतिक परंपरा को परवान चढ़ाने में कोई भी कोर-कसर नहीं छोड़ी। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने से पहले हो चुके संतों, भक्तों, रबाबियों, भट्टों के साथ-साथ पूर्व गुरुओं की बाणी का विशेष परिश्रम द्वारा संकलन करके श्री गुरु ग्रंथ साहिब का सुष्ठु संपादन-कार्य सम्पन्न करके आने वाली पीढ़ियों को एक बहुमूल्य देन प्रदान की है। इस महान ग्रंथ में विभिन्न राग-रागनियां, विविध कीर्तन-गायन-पद्धतियों के रूप में बाणियों के रंग-बिरंगे रूप, अनेक प्रकार के संगीत-विषयक शीर्षक, संकेत और बाणी के फ़रमान प्रस्तुत किए हैं, जिनसे हमारे सामने संगीत-परंपरा का व्यवहारिक पक्ष उभरकर सामने आता है।

अब हम कुछेक शीर्षकों के अंतर्गत श्री गुरु अरजन देव जी के इस अमर सांगीतिक योगदान को सोदाहरण रेखांकित करने की थोड़ी-बहुत चेष्टा करेंगे :-

१. श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी और रागों की नियोजना : गुरु साहिब ने २३१३ शबदों वालौ अपनी बाणी को विभिन्न राग-रागनियों में प्रस्तुत किया है, जो कि इस प्रकार हैं :- राग सिरी, माझ, गउड़ी, गउड़ी गुआरेरी, गउड़ी चेती, गउड़ी बैरागणि, गउड़ी पूरबी, गउड़ी माझ, गउड़ी मालवा, गउड़ी माला, आसा, आसा काफी, आसावरी, गूजरी, देवगंधारी, देव गंधार, बिहागड़ा, सोरठि, वडहंस, धनासरी, जैतसरी, टोडी, बैराड़ी, तिलंग, सूही, बिलावलु, गोंड, रामकली, नट नाराइन, नट, माली गउड़ा, मारू, तुखारी, केदारा, भैरउ, बसंतु, सारग, मलार, कानड़ा, कलिआन,परभाती, परभाती बिभास, बिभास परभाती आदि।

२. बाणीगत रूप और प्रकार : परंपरागत और देशी काव्यगत विभिन्नता को दृष्टि में रखकर गुरु जी ने रागों का जो वर्गीकरण किया है, उस दृष्टि से बाणी में असटपदी, पदे और पड़ताल नामक गायन-शैलियों का प्रयोग किया है; लोकवाणीगत रूपों के धरातल पर वार, छंत, घोड़ीआं और अलाहुनीआं आदि गायन-पद्धतियों का सुंदर व्यवहार किया है। इन सभी बाणीगत रूपों या प्रकारों में पड़ताल एकदम नवीन गायन-शैली मानी जाती है, जिसका श्री गुरु ग्रंथ साहिब में पहली बार प्रयोग देखने को मिलता है। गुरु जी ने कुल ३६ पड़तालों की नियोजना की है, जोकि इन रागों में निबद्ध हुई हैं :- आसा, धनासरी, सूही, बिलावलु, नट, रामकली, भैरउ, सारग, परभाती और मलार राग।

३. श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी का

**पायल म्यूजिक हाऊस, गुरुद्वारा सिंघ सभा रोड, धूरी गेट, संगरूर (पंजाब)-१४८००१; मो: ९४६३५-२५४९०*

गुरमति-संगीत को योगदान : श्री गुरु ग्रंथ साहिब में जो संगीत-विधान या शिल्प दिया हुआ है, श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी भी उसी के सांचे में पूरी उतरने वाली है। इसमें राग, बाणी, रूप, रहाउ, अंक, शीर्षक, संकेत और बाणी के वर्तमान शबद सभी कुछ कीर्तन का एक पूरा शिल्प या विधान निर्मित कर रहे हैं, ऐसा कहा जा सकता है। गुरु साहिब ने अपनी बाणी द्वारा गुरमति संगीत के विकास में जो बहुमूल्य योगदान किया है, उसका आगे संक्षेप में कतिपय शीर्षकों के अंतर्गत विवेचन किया जा रहा है :-

३.१ कीर्तन को वरीयता प्रदान करना : श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब की स्थापना करके पूर्ववर्ती गुरु साहिबान द्वारा प्रवर्तित कीर्तन-परंपरा की मर्यादा में रहकर उसे ही विकसित किया है। आजकल श्री हरिमंदर साहिब में निरंतर उसी कीर्तन-शैली का प्रवाह बदस्तूर कायम है। इतना ही नहीं, अध्यात्म और संगीत के क्षेत्र में इसी कीर्तन-परंपरा का दिनो-दिन और भी विकास किया जा रहा है। श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी बाणी में स्थल-स्थल पर कीर्तन की उपादेयता या महत्ता को रेखांकित करते हुए जो पंक्तियां दर्ज की हैं, उनमें से कुछ को आगे अवलोकनार्थ प्रस्तुत किया जा रहा है :-

-- हरि कीरतनु गावहु दिनु राती सफल एहा है कारी जीउ ॥ (पन्ना १०८)

-- साधसंगि हरि कीरतनु गाईऐ ॥ कहु नानक वडभागी पाईऐ ॥ (पन्ना १७९)

-- हरि कीरतनु सुणै हरि कीरतनु गावै ॥ तिसु जन दूखु निकटि नही आवै ॥ (पन्ना १९०)

-- हरि कीरति कलजुगि पदु ऊतमु हरि पाईऐ सतिगुर माझा ॥ (पन्ना ६९७)

-- जो जनु करै कीरतनु गोपाल ॥ तिस कउ पोहि न सकै जमकालु ॥ (पन्ना ८६७)

-- कीरतनु निरमोलक हीरा ॥ आनंद गुणी गहीरा ॥ (पन्ना ८९३)

-- कलजुग महि कीरतनु परधाना ॥ गुरमुखि जपीऐ लाइ धिआना ॥ (पन्ना १०७५)

-- जो जो कथै सुनै हरि कीरतनु ता की दुरमति नास ॥
सगल मनोरथ पावै नानक पूरन होवै आस ॥ (पन्ना १३००)

३.२. रागात्मक कीर्तन-चौंकियां : सिक्ख धर्म में कीर्तन करने की परंपरा का आरंभ सर्वप्रथम श्री गुरु नानक देव जी के द्वारा किया जा चुका था। सिक्ख मत का सर्वप्रथम प्रचार-स्थान या केंद्र करतारपुर रहा है। वहीं निवास करते हुए श्री गुरु ग्रंथ साहिब के लिपिकार और विद्वान भाई गुरदास जी ने स्वयं इस तथ्य की पुष्टि की है--- *"सोदरु आरती गावीऐ अंम्रित वेले जापु उचारा ॥"*

डॉ. गुरनाम सिंघ इस सुस्पष्ट उल्लेख के बाद लिखते हैं कि गुरु साहिबान के द्वितीय ज्योति-पुरुष श्री गुरु अंगद देव जी के समय में सोदरु आरती के बाद ही आसा की वार की चौंकी करनी प्रचलित हुई थी। उनके अनंतर स्वयं श्री गुरु अरजन देव जी ने श्री हरिमंदर साहिब में रागात्मक कीर्तन की उसी सुंदर परंपरा को चालू रखा था। दिन के चार समयों में कीर्तन करने की इन चार रीतियों के जो उल्लेख पंजाबी भाषा के 'महान कोश' के संपादक भाई कान्ह सिंघ नाभा ने किए हैं, उनमें से कुछ आगे प्रस्तुत किए जा रहे हैं :-

१. अमृत वेले आसा की वार की चौंकी।

२. सवा पहिर दिन चढ़ने पर चरन कमल की चौंकी।

("चरन कमल प्रभ के नित धिआवउ" शबदों का गायन करने के कारण ही संज्ञा पड़ी है।)

३. शाम के समय 'रहरासि' से पहले सो दरु दी चौंकी।

("सो दरु केहा सो घरु केहा" शबद के कारण यह संज्ञा सार्थक सिद्ध होती है।)
४. चार घड़ी रात बीतने पर 'कलिआन की चौकी', जिसमें राग कलिआन के शबदों का गायन किया जाता है।

'गुर प्रताप सूरज' और 'गुर बिलास पातशाही छेवीं' जैसे ग्रंथों में श्री गुरु अरजन देव जी के काल में इन कीर्तन-चौंकियों के प्रचलन की गवाहियां प्राप्त होती हैं। 'गुर बिलास पातशाही छेवीं' में तो स्पष्ट रूप से यह कहा गया है कि :

जामु एकु निसि जब गई कीरतनु होत बयंत।
कानड़े दी चौकी भई स्री गुर सुनै अनंत।
(पृष्ठ १२७)

यहां कानड़े या कलिआन की जिस चौंकी का उल्लेख हुआ है, उसका समारंभ स्वयं श्री गुरु अरजन देव जी के काल में श्री हरिमंदर साहिब में हो चुका था। समग्रत: कहा जा सकता है कि गुरु जी ने जिन रागात्मक चौंकियों को एक प्रभावशाली संस्था के रूप में विकसित किया, वे ये हैं :- आसा की वार की चौंकी, चरन कमल की चौंकी, सो दरु की चौंकी, आरती की चौंकी और कानड़े या कलिआन की चौंकी।[१]

३.३ कीर्तन सम्बंधी वाद्य यंत्रों की भूमिका : गुरु जी ने कीर्तन की परंपरा को प्रफुल्लित करने के लक्ष्य से अधिकतर तंत्री (तार वाले) वाद्यों का ही दामन थामा और उन्हें प्रचलित करने में अपनी महती भूमिका का निर्वाह किया था। उनसे पहले कीर्तन की परंपरा में रबाब या सारंदा नामक वाद्य का ही विशेष प्रचलन था। यदि पंजाबी भाषा के 'यथा नाम तथा गुण' कहलाने वाले 'महान कोश' के संपादक भाई कान्ह सिंघ नाभा के कथन पर विचार करें तो हमें पता चलता है कि यह वाद्य सदैव गज़ की सहायता से बजाए जाने वाला एक ऐसा तंत्री-वाद्य होता है, जो श्रेष्ठ स्वर निकाला करता है। इसी को श्री गुरु अरजन देव जी ने अपनी अद्वितीय बौद्धिक युक्ति के द्वारा निर्मित करके सिक्ख रागियों को उसके वादन की समुचित शिक्षा देकर उन्हीं को समर्पित किया था। कहते हैं कि जब एक बार गुरु जी बाबा मोहन जी से पोथियां लेने के प्रयोजन से उनके पास गोइंदवाल साहिब पहुंचे थे, तब उनके घर के बाहर उन्होंने इसी सारंदे (रबाब) से कीर्तन किया था।[२]

३.४. कीर्तन की संस्था के विकास में योगदान: श्री गुरु अरजन देव जी ने अपने काल तक हुए सभी सिक्ख रबाबी कीर्तनियों (कीर्तनकारों) के वर्ग को विशेष संरक्षण प्रदान करने के ऐतिहासिक महत्त्व का कार्य सम्पन्न किया था। डॉ. गुरनाम सिंघ ने अपने पहले के उद्धृत लेख में इसी संदर्भ में जो विचार व्यक्त किए हैं, उनका हिंदी भाषा में अनुवाद आगे प्रस्तुत किया जा रहा है :-

"इसी प्रकार श्री गुरु नानक देव जी के काल में भाई मरदाना जी, श्री गुरु अंगद देव जी के काल में भाई सजादा जी, भाई सादू जी, भाई बाद जी, भाई रजादा जी,[३] और भाई बलवंड जी कीर्तनिए थे। श्री गुरु अमरदास जी के काल में भाई सत्ता जी, भाई बलवंड जी, भाई पांधा जी और भाई बुल्ला रबाबी गिनाए जा सकते हैं। इसी प्रकार श्री गुरु रामदास जी के काल में भाई सत्ता जी और भाई बलवंड जी कीर्तनिए गुरु-घर की सेवा में संलग्न रहे थे। श्री गुरु अरजन देव जी के काल में जो कीर्तनिए सेवा कर रहे थे, उनके सम्बंध में भाई गुरदास जी की वारों में स्पष्ट रूप से जो उल्लेख मिलते हैं[४], उनमें से एक का उदाहरण आगे दिया जा रहा है :

गोखू टोडा महतिआ तोता मदू सबद वीचारा।
झांझू अते मुकंदु है कीरतनु कके हजूरि किदारा।

साधसंगति परगटु पहारा ॥ (वार ११:१८)

जब श्री गुरु अरजन देव जी के दरबार में रबाबी भाई सत्ता जी-भाई बलवंड जी रुष्ट हो गए, तब उस घटना ने तो गुरमति संगीत को और भी अधिक विकसित करने में योगदान किया था। इसी छोटी-सी घटना की सहायता से गुरु जी ने सिक्ख संगत को कीर्तन की गायन-शैली का प्रचार करने का माध्यम बना कर उन्हें विशेष रूप से उत्साहित किया था। भाई संतोख सिंघ ने अपने ग्रंथ 'गुर प्रताप सूरज' में इसी की ओर संकेत करते हुए ये वचन लिखे हैं :-

सभि संगति इकठी भई दीवान लगाए।
सिक्खनि को आइसु दई, तुम राग सुनावहु।
गावहु शबद सु तान जुति विद्‌दया इहु पावहु ॥१४॥
गहयो दुतारा सिख किह, किन गही रबाबं।
हुइ निशंक गावनि लगे सब भए अजाबं।
बचन मानबे गुरू को बिद्‌दया सभि पाई।
जानति हुते न राग को गावति बिसमाई ॥१५॥
सुनि सिक्खनि के राग को गुर भए प्रसंना।
बर दीनो तुम प्रेम जुत हमरो बच मंना।
अब ते बिद्‌दया राग की सिखनि महिं आई।
गावहिं सुनहिं सु प्रीत धरि लें सुभ गति पाई ॥१६॥

इस सायास प्रयास के फलस्वरूप सिक्ख संगत में कीर्तन की शैली का गायन, वाद्य-यंत्रों का वादन और इसके साथ-साथ कीर्तन-गायन के ही अंतर्गत लोक-संगीत भी प्रवाहित होने लग गया था। इस काल में ऐतिहासिक रूप में दर्ज कराए जाने योग्य नि:स्वार्थ कीर्तनियों के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं :- भाई दीपा, भाई रुल्ला, भाई नराइण दास, भाई उगरसैन, भाई झाजू, भाई मुकंद, भाई कदारा इत्यादि।

कीर्तन की समृद्ध परंपरा से जुड़े वाद्य-यंत्रों के साथ ही दुंदुभि, नफ़ीरी, शंख, तुरही, लघु दुंदुभि, सितार, दुतारा, मुरली, ढोल, डफ्फ, बांसुरी, तंबूरा इत्यादि वाद्य-यंत्रों का प्रचलन भी किसी-न-किसी रूप में रहा है।

४. *निष्कर्ष* :- इस संक्षिप्त से विवेचन से एक बात यह उभरकर सामने आती है कि श्री गुरु अरजन देव जी ने कुल मिलाकर सैद्धांतिक और व्यवहारिक दोनों ही दृष्टियों से गुरमति संगीत की जानदार और शानदार स्थापना की है। गुरमति संगीत के सामान्य विज्ञान को गुरु जी ने श्री गुरु ग्रंथ साहिब की परंपरागत संगीत-कला के आलोक में अपनी बाणी को ढालते हुए अतिशय विकास के सोपानों पर आरूढ़ करने-कराने में कोई भी कोर-कसर नहीं रखी है। श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी में विभिन्न रागों, गायन-विषयक विभिन्न ढंगों या रूपों, कीर्तन-विषयक विविध नियमों, फ़रमानों की रचना और संकेतों या शीर्षकों आदि का समाहार करने के कारण गुरमति संगीत की परंपरा को विकास के शिखरों पर प्रतिष्ठित करने में विशेष सहायता प्राप्त हुई है। इसमें दो मत कदापि नहीं हो सकते। गुरमति संगीत के सम्बंध में और अधिक शोध करने वाले शोधार्थियों और अध्यापकों आदि को श्री गुरु अरजन देव जी की बाणी और उसमें संगीत की नियोजना-सम्बंधी इस महती भूमिका से आगे भी सहायता मिल सकती है।

संदर्भ-संकेत :

१. डॉ. गुरनाम सिंघ, पंजाबी पत्रिका--- समाजिक विगिआन पत्तर (पटियाला, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पब्लिकेशन ब्यूरो), श्री गुरु अरजन देव जी दी शहादत--विशेष अंक, अंक ५४, सन् २००६, लेख श्री गुरु अरजन देव जी दी गुरमति संगीत नूं देण, पृष्ठ ८३.
२. डॉ. गुरनाम सिंघ, प्रबंध ते पासार, पृष्ठ १६०.
३. डॉ. तारन सिंघ, अनंद जोति ते जुगति, पृष्ठ २९.
४. डॉ. गुरनाम सिंघ, पंजाबी पत्रिका---समाजिक विगिआन पत्तर, लेख वही, पृष्ठ ८३.



भक्त कबीर जी की अंतर-धर्म सम्बंधी दृष्टि

*-डॉ. जसविंदर कौर**

भक्त कबीर जी की गणना मध्यकालीन भक्तों में की जाती है। उन्होंने न केवल अपने समसामयिक युग को अपितु आधुनिक युग को भी प्रभावित किया है। उन्होंने भारतीय साहित्य और समाज को नूतन एवं मौलिक चिंतन प्रदान किया। भक्त कबीर जी के समय समाज धार्मिक संकीर्णता तथा असमानता वाले सामाजिक प्रबंध के दमनकारी प्रभाव से ओतप्रोत था। उस समय मुसलिम हाकिम बहुत कट्टर हो गये थे। यहां तक की सिकंदर लोधी जैसे न्यायपसंद सुलतान के राज्य में भी बोधन ब्राह्मण को कत्ल किया गया था। बोधन भक्त कबीर जी का शिष्य था जिसका दोष मात्र इतना था कि उसने यह कहने का साहस किया था कि उसका अपना धर्म उतना ही सत्य है जितना इसलाम।

भक्त कबीर जी के शिष्य बोधन की अंतर-धर्म सम्बंधी दृष्टि के पीछे भक्त कबीर जी की अंतर-धर्म सम्बंधी सूझ की प्रेरणा थी। भक्त कबीर जी की इस सम्बंधी सूझ की समझ के लिए श्री गुरु ग्रंथ साहिब में दर्ज उनकी बाणी को आधार बनाना होगा। भक्त कबीर जी की अन्य रचनाएं हमें बीजक, कबीर ग्रंथावली तथा कई अन्य स्रोतों से प्राप्त होती हैं परंतु इस लेख में सिर्फ श्री गुरु ग्रंथ साहिब में संग्रहित उनकी बाणी तक ही अपने अध्ययन को सीमित रखा जायेगा। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में गुरु साहिबान के अतिरिक्त १२वीं से १७वीं सदी के भक्तों तथा गुरु साहिबान के निकटवर्ती गुरसिक्खों के अलावा भट्टों की बाणी संग्रहित है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उन्हीं महापुरुषों की बाणी को स्थान प्राप्त हुआ है जिनकी विचारधारा सिक्ख गुरु साहिबान की विचारधारा के साथ समानता रखती थी। पांचवें सिक्ख गुरु साहिब श्री गुरु अरजन देव जी ने इस महान ग्रंथ का संपादन करते समय जिन भक्तों की बाणी को इसमें स्थान दिया उनमें भक्त कबीर जी का प्रमुख स्थान है। भक्त साहिबान की बाणी के इस पावन ग्रंथ में सम्मिलित होने के कारण यह किसी क्षेत्र आदि का ग्रंथ न होकर विशाल भारत के प्रतिनिधि महापुरुषों का ग्रंथ बन गया है। श्री गुरु ग्रंथ साहिब में ५०० वर्ष के सर्वश्रेष्ठ गुरमति साहित्य को संग्रहित किया गया है। इस प्रकार यह ग्रंथ देश-काल की सीमाओं से परे होकर एक अनमोल ग्रंथ बन गया है। इस ग्रंथ के बाणीकारों का चयन जाति, रंग, धर्म, देश, काल के आधार पर नहीं किया गया, इसलिए यह ग्रंथ धर्म-निरपेक्ष है।

श्री गुरु ग्रंथ साहिब में सिक्ख गुरु साहिबान के अतिरिक्त जिन महापुरुषों की बाणी संग्रहित है उनमें से भक्त कबीर जी की सबसे अधिक बाणी है। भक्त कबीर जी की बाणी को महत्त्वपूर्ण मानकर श्री गुरु ग्रंथ साहिब में उनकी बाणी को सिक्ख गुरु साहिबान के पश्चात स्थान दिया गया है। भक्त कबीर जी अपनी बाणी के सम्बंध में कहते हैं :

लोगु जानै इहु गीतु है इहु तउ ब्रहम बीचार ॥
(पन्ना ३३५)

**१४७, कबीर पार्क, श्री अमृतसर-१४३००५, मो ९४१७१-४५४४५*

भक्त कबीर जी की धर्म के प्रति दृष्टि को जानने के लिए उनके समय के युग की परिस्थितियों का बोध होना आवश्यक है। भक्त कबीर जी का युग हिंदू-मुसलमानों के सांस्कृतिक संघर्ष का युग था। धार्मिक मतभेदों ने लोगों को कई वर्गों में बांट दिया था। यह अंतर मात्र हिंदू-मुसलमानों में ही नहीं थे, बल्कि एक ही जाति और धर्म के लोग भी कई संप्रदायों में बंटे हुए थे। समाज पूरी तरह विकृत हो चुका था। हिंदुओं में छुआछूत और उच्च वर्ग के व्यवहार ने सामाजिक असमानता को जन्म दिया। मुगल तेग के ज़ोर पर अपने धर्म का प्रचार करना चाहते थे।

धर्म का कार्य आपस में जोड़ना है। कई बार धर्म के नाम पर मानव को मानवता से पृथक किया गया। धर्म के प्रचार और प्रसार के नाम पर भिन्न-भिन्न प्रकार के अत्याचार किये जाते हैं। दूसरे शब्दों में, धर्म के नाम पर अधार्मिकता का प्रचलन किया जाता रहा है। भक्त कबीर जी जैसे विचारकों के अनुसार यह धर्म का वास्तविक स्वरूप नहीं है। भक्त कबीर जी ने अपनी बाणी में स्पष्ट रूप से प्रचलित धार्मिक आडंबरों को नकारा। उन्होंने कहा कि कई लोग बाहरी चिन्हों को ही जीवन का उचित मार्ग मान बैठे हैं, इसलिए दुनिया भ्रम-जाल में फंसी हुई है :

जोगी कहहि जोगु भल मीठा अवरु न दूजा भाई ॥
रुंडित मुंडित एकै सबदी एइ कहहि सिधि पाई ॥
हरि बिनु भरमि भुलाने अंधा ॥
जा पहि जाउ आपु छुटकावनि ते बाधे बहु फंधा ॥१॥ रहाउ ॥
जह ते उपजी तही समानी इह बिधि बिसरी तब ही ॥
पंडित गुणी सूर हम दाते एहि कहहि बड हम ही ॥ (पन्ना ३३४)

जिन लोगों ने वेद-पुराण पढ़कर कर्मकांड की आशा रखी वे आशा पूरी हुए बिना ही संसार त्याग गये हैं। कई लोगों ने जंगलों में जाकर योग-तप किये, कंद-मूल खाकर जीवन-निर्वाह किया। योगी, कर्मकांडी, अलख जगाने वाले मौनधारी यम के पाले पड़ गये। जिसने शरीर पर चक्र-चिन्ह तो लगा लिये, राग-रागिनी तो गाता रहा, पर मात्र पाखंड की मूर्ति बना रहा, ऐसा मनुष्य व्यर्थ में जीवन गंवाता है। यदि नग्न रहने से मुक्ति मिलती तो हर जानवर मुक्त होता, सिर मुंडाने से मुक्ति होती तो भेड़ मुक्त होती, बिंदु रखने से मुक्ति होती तो खुसरा मुक्त होता। वे हिंदू-मुसलमान दोनों की समान रूप से आलोचना करते हुए कहते हैं :

बुत पूजि पूजि हिंदू मूए तुरक मूए सिरु नाई ॥
ओइ ले जारे ओइ ले गाडे तेरी गति दुहू न पाई ॥ (पन्ना ६५४)

हिंदू-मुसलमान दोनों इस बात को लेकर झगड़ते हैं कि दोनों में से सच्चा कौन है। भक्त कबीर जी के अनुसार दोनों ही प्रभु का वास्तविक स्वरूप समझने में असमर्थ हैं और व्यर्थ के कर्मकांडों और झगड़ों में फंसे हुए हैं। भक्त कबीर जी अपनी बाणी में बार-बार इस बात की चर्चा करते हैं कि हिंदू मूर्ति-पूजा, तीर्थ-स्नान, श्राद्ध, वेद-पाठ, जाति-अभिमान के चक्रव्यूह में उलझे हुए हैं।

मूर्ति-पूजा का खंडन बड़े तार्किक ढंग से करते हुए वे कहते हैं कि मूर्तिकार पत्थर घड़कर मूर्ति बनाता है और इस प्रक्रिया में वह पत्थर पर पांव रखकर खड़ा हो जाता है। अगर यह मूर्ति वास्तविक देवता है तो यह उस मूर्तिकार द्वारा अपना अपमान करने के कारण उसका नाश क्यों नहीं करती?

पाखन गढि कै मूरति कीन्ही दे कै छाती पाउ ॥
जे एह मूरति साची है तउ गढ़णहारे खाउ ॥
(पन्ना ४७९)

मूर्ति को जो दाल, भात, लापसी, कासार अर्पित किया जाता है वह तो पुजारी ही खा जाता है, मूर्ति तो निर्जीव होने के कारण उसका भोग नहीं कर सकती :

भातु पहिति अरु लापसी करकरा लासारु ॥
भोगनहारे भोगिआ इसु मूरति के मुख छारु ॥
(पन्ना ४७९)

यदि मन में विकारों की मैल है तो तीर्थ-स्नान मुक्त नहीं कर सकता। यदि स्नान से ही मुक्ति मिलती होती तो सर्वप्रथम मेंढ़क को मुक्त होना चाहिये, क्योंकि वो सदा स्नान करता रहता है। नाम-विहीन मेंढ़क के समान लोग आवागमन के चक्र में पड़े रहते हैं :

जल कै मजनि जे गति होवै नित नित मेंडुक नावहि ॥
जैसे मेंडुक तैसे ओइ नर फिरि फिरि जोनी आवहि ॥ (पन्ना ४८४)

भक्त कबीर जी (तत्कालीन परंपरा पर कुठाराघात करते हुए) कहते हैं कि कठोर मन का व्यक्ति यदि काशी में भी शरीर त्यागेगा तो उसे मुक्ति नहीं मिलेगी और प्रभु-भक्त मगहर में प्राण त्यागने पर स्वयं भी पार उतर जाता है तथा अपने कुटुंब को भी भवसागर से पार करा देता है। प्रभु किसी समय या स्थान का मुहताज नहीं है। लौकी या तुंबी अठसठ तीर्थों का स्नान करने के उपरांत भी अपना स्वभाव नहीं त्याग पाती :

लउकी अठसठि तीरथ न्हाई ॥
कउरापनु तऊ न जाई ॥ (पन्ना ६५६)

तीर्थों पर जाकर भी मन को धैर्य नहीं आता, वहां भी अधिकतर लोग पुण्य-पाप में लगे रहते हैं :

तटि तीरथि नही मनु पतीआइ ॥
चार अचार रहे उरझाइ ॥ (पन्ना ३२५)

पितृ-पूजा की महत्ता को अस्वीकार करते हुए भक्त कबीर जी कहते हैं कि जब पितृ जीवित होते हैं तो उनकी लोग उपेक्षा करते हैं, पर उनकी मृत्यु के उपरांत उनका श्राद्ध करते हैं। जो भोजन मिट्टी के देवी-देवता बनाकर उनके आगे रख दिया जाता है उसे वे खाने में तो असमर्थ रहते हैं पर कौवों और कुत्तों को मौज लग जाती है। यदि पितृों में भोजन ग्रहण करने की सामर्थ्य होती तो वे अपनी मनभावक वस्तुएं मांग सकते थे, पर वे ऐसा नहीं कर सकते, इसलिये वे उनके निमित अर्पित खाद्य भी ग्रहण करने से असमर्थ हैं :

जीवत पितर न मानै कोऊ मूएं सिराध कराही ॥
पितर भी बपुरे कहु किउ पावहि कऊआ कूकर खाही ॥
मो कउ कुसलु बतावहु कोई ॥
कुसलु कुसलु करते जगु बिनसै कुसलु भी कैसे होई ॥१॥रहाउ॥
माटी के करि देवी देवा तिसु आगै जीउ देही ॥
ऐसे पितर तुमारे कहीअहि आपन न लेही ॥२॥
(पन्ना ३३२)

वेद, पुराण, स्मृतियों के किए पाठ भी तभी सफल हैं जब उनमें निहित उचित भावना को समझा जाये :

बेद कतेब कहहु मत झूठे झूठा जो न विचारे ॥
(पन्ना १३५०)

वेद-पुराण पढ़कर कर्मकांडों पर आशा रखने से कोई लाभ नहीं होता। स्मृतियों द्वारा निर्धारित वर्णाश्रम और कर्मकांड सांकलों की भांति हैं, जिन्होंने श्रद्धालुओं को जकड़ा हुआ है। इनसे छुटकारा प्राप्त करना कठिन है :

बेद की पुत्री सिंम्रिति भाई ॥
सांकल जेवरी लै लै आई ॥ (पन्ना ३२९)

भक्त कबीर जी ने रखे जाने वाले व्रतों को भी कर्मकांड से अधिक कुछ नहीं माना:

कबीर हरि का सिमरन छाडि कै अहोई राखे नार ॥
. . . . . .भार सहे मन चारि ॥ (पन्ना १३७०)

भक्त कबीर जी अपनी बाणी में बहुत ही तार्किक ढंग से समझाते हैं कि कर्मकांडी मनुष्य प्रभु को, धर्म को मात्र खिलौना समझते हैं :

झगरा एकु निबेरहु राम ॥
जउ तुम अपने जन सौ कामु ॥१॥
इहु मनु बडा कि जा सउ मनु मानिआ ॥
रामु बडा कै रामहि जानिआ ॥
ब्रहमा बडा कि जासु उपाइआ ॥
बेदु बडा कि जासु उपाइआ ॥२॥
कहि कबीर हउ भइआ उदासु ॥
तीरथु बडा कि हरि का दासु ॥३॥ (पन्ना ३३१)

जाति के नाम पर औरों के साथ असमानता का व्यवहार किया जाता है। भक्त कबीर जी कहते हैं कि मां के गर्भ में कुल-जाति नहीं होती। ब्राह्मण को जनेऊ का तथा वेद पढ़ने का अभिमान है। वे वेद-विद्या पढ़कर भी मांगते फिरते हैं। योगी भी मुद्रा, खफनी और झोली आदि के धार्मिक भेस धारण करके कुमार्ग पर चल पड़ा है और घर-घर मांगता फिरता है। भक्त कबीर जी योगी, जती, तपी, सन्यासी, सरवड़े, बैरागी, मौनधारी, जटाधारी, ज्योतिषी और व्याकरण के विद्वानों को भी (परमात्मा प्रति) अज्ञानतावश वास्तविक मार्ग से भटके हुए और आवागमन के चक्र में पड़े हुए मानते हैं :

जोगी जती तपी संनिआसी बहु तीरथ भ्रमना ॥
लुंजित मुंजित मोनि जटाधर अंति तऊ मरना ॥
ता ते सेवीअले रामना ॥
रसना राम नाम हितु जा कै कहा करै जमना ॥
(पन्ना ४७६)

भक्त जी यह भी कहते हैं कि सनक, सनंद, शिव, शेषनाग आदि भी धर्म के वास्तविक स्वरूप को समझने में असमर्थ रहे हैं :

सनक सनंद महेस समानां ॥
सेखनागि तेरो मरमु न जानां ॥ (पन्ना ६९१)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि कई लोग मात्र शरह के दीवाने होकर व्यर्थ ही जीवन गंवा रहे हैं :

रोजा धरै मनावै अलहु सुआदति जीअ संघारै ॥
आपा देखि अवर नही देखै काहे कउ झख मारै ॥
(पन्ना ४८३)

वे काजी को कहते हैं कि धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का तब तक कोई लाभ नहीं है जब तक उसमें दर्ज उपदेशों पर अमल न किया जाए। वे मुल्ला को ऊंचे चढ़कर बांग देने पर कहते हैं कि खुदा बहरा नहीं है :

कबीर मुलां मुनारे किआ चढहि सांई न बहरा होइ ॥
जा कारनि तूं बांग देहि दिल ही भीतरि जोइ ॥
(पन्ना १३७४)

वे कहते हैं कि मैं हज करने काबे गया तो खुदा ने कहा, तुझे किसने भ्रम-जाल में डाल दिया है?

कबीर हज काबे हउ जाइ था आगै मिलिआ खुदाइ ॥
सांई मुझ सिउ लरि परिआ तुझै किन्हि फुरमाई गाइ ॥ (पन्ना १३७५)

काजी को वे कहते हैं :

काजी तै कवन कतेब बखानी ॥
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥ (पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी मुसलमान को सच्चा

मुसलमान, हिंदू को सच्चा हिंदू, योगी को सच्चा योगी, काजी को सच्चा काजी बनने का संदेश देते हैं। असली काजी के गुणों की चर्चा करते हुए वे कहते हैं :

सो मुलां जो मन सिउ लरै ॥
गुर उपदेसि काल सिउ जुरै ॥
काल पुरख का मरदै मानु ॥
तिसु मुला कउ सदा सलामु ॥१॥
है हजूरि कत दूरि बतावहु ॥
दुंदर बाधहु सुंदर पावहु ॥१॥ रहाउ॥
काजी सो जु काइआ बीचारै ॥
काइआ की अगनि ब्रहमु परजारै ॥
सुपनै बिंदु न देई झरना ॥ (पन्ना ११५९)

इस तरह का मुल्ला, काजी आदरणीय है जो आवागमन के चक्र से मुक्त है।

भक्त कबीर जी कहते हैं कि ब्राह्मण वो है जो देवी-देवताओं को नहीं बल्कि निर्गुण, निराकार ब्रह्म की भक्ति, स्मरण, विचार करता है। वे ऊंच-नीच वाली जाति-प्रथा पर करारी चोट करते हुए फरमान करते हैं :

कहु रे पंडित बामन कब के होए ॥
बामन कहि कहि जनमु मत खोए ॥१॥रहाउ॥
जौ तूं ब्राहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥२॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्राहमणु कहीअतु है हमारे ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि कई लोग सिर्फ दूसरों को उपदेश देते हैं, उनके अपने अंदर कोई ठहराव नहीं आता। ऐसे लोग औरों की राशि (पूंजी) की रक्षा करने का यत्न करते हुए अपने गुणों को भी गंवा लेते हैं :

कबीर अवरह कउ उपदेसते मुख मै परि है रेतु ॥
रासि बिरानी राखते खाया घर का खेतु ॥
(पन्ना १३६९)

भक्त कबीर जी के अनुसार वास्तविक योगी वो है जो ज्ञान को गोदड़ी बनाता है; प्रभु-चरणों में लगी हुई सुरति की सूई तैयार करता है, गुरु-शब्द रूपी धागा बाटकर उस सूई में डालता है, दया की पहौड़ी बनाता है, प्रभु-प्रेम अपने हृदय में बसाता है और अपनी सुरति प्रभु-चरणों में लगाये रखता है। प्रभु-नाम का स्मरण ही सबसे अच्छा योग है :

खिंथा गिआन धिआन करि सूई सबदु तागा मथि घालै ॥
पंच ततु की करि गिरगाणी गुर कै मारगि चालै ॥
(पन्ना ४७७)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि ब्राह्मण उस प्रभु को क्यों भूल जाता है जिसके मुख से वेद और गायत्री निकले हैं? पंडित उस प्रभु को स्मरण क्यों नहीं करता जिसने समस्त संसार बनाया है? हे ब्राह्मण! तू प्रभु-नाम का स्मरण नहीं करता, इसी कारण तू नरक भोग रहा है:

जिह मुख बेदु गाइत्री निकसै सो किउ ब्रहमनु बिसरु करै ॥
जा कै पाइ जगतु सभु लागै सो किउ पंडितु हरि न कहै ॥
काहे मेरे बाम्हन हरि न कहहि ॥
रामु न बोलहि पाडे दोजकु भरहि ॥
(पन्ना ९७०)

प्रभु-स्मरण ही माया की तृष्णा को मिटा सकता है। प्रभु का नाम ही ऐसा है जिसमें जुड़ कर जीव अडोल रह सकता है। यह नाम मनुष्य के अंदर ही है :

निज घरि पारसु तजहु गुन आन ॥
कबीर निरगुण नाम न रोसु ॥
इसु परचाइ परचि रहु एसु ॥ (पन्ना ३२५)

प्रभु जिस पर कृपा करके उसके हृदय में निवास करता है, उसमें प्रभु-नाम की सुगंधि का वास हो जाता है। जो मनुष्य प्रभु का स्मरण करते हैं वे उनसे भिन्न नहीं रह जाते, वे उसके साथ एक रूप हो जाते हैं। ऐसे जीव के मन में शांति और स्थिरता पैदा हो जाती है और उसके मन से हउमै और द्वैत आदि समाप्त हो जाते हैं :

कवला चरन सरन है जा के ॥
कहु जन का नाही घर ता के ॥३॥
सभु कोऊ कहै जासु की बाता ॥
सो संम्रथु निज पति है दाता ॥४॥
कहै कबीरु पूरन जग सोई ॥
जा के हिरदै अवरु न होई ॥ *(पन्ना ३३०)*

गुरु-शब्द जीव को ऐसा बना देता है कि वह न बुरा बोलता है, न बुरा सुनता है और न ही उसके पांव बुरे कार्य की ओर उठते हैं। वह निर-अहंकार हो जाता है। उसका हृदय प्रभु-चरणों में जुड़ जाता है।

भक्त कबीर जी भक्ति के साथ सच्चे धर्म के लिए साधसंगत को बहुत महत्ता देते हैं। वे कहते हैं कि असली बैकुंठ साधसंगत में ही है :

भगति बिनु बिरथे जनमु गइओ ॥
साधसंगति भगवान भजन बिनु कही न सचु रहिओ ॥ *(पन्ना ३३६)*

उचित मार्ग पर चलने के लिये गुरु मार्गदर्शन करता है। गुरु बहुत सोच-समझ के बाद धारण करना चाहिए। सच्चे गुरु की प्राप्ति से अंधकार दूर होकर अमूल्य निधि प्राप्त हो जाती है :

--सो गुरु करहु जि बहुरि न करना ॥ *(पन्ना ३२७)*
--गुपता हीरा प्रगट भइओ जब गुर गम दीआ दिखाई ॥ *(पन्ना ४८३)*
--सतिगुरु मिलै अंधेरा चूकै इन बिधि माणकु लहीऐ ॥ *(पन्ना ३३४)*

भक्त कबीर जी के अनुसार जब नम्रता वाला स्वभाव जीव के अंदर प्रवेश कर जाता है तो अहंकार वाले स्वभाव का बल स्वयं ही समाप्त हो जाता है। जब नम्रता वाला स्वभाव सदा साथ रहता है तो अंहकार-बुद्धि का विनाश हो जाता है। भक्त कबीर जी दया-गुण के धारण पर भी ज़ोर देते हैं :

कहतु कबीरु सुनहु रे संतहु धरमु दइआ करि बाड़ी ॥ *(पन्ना ९७०)*

जिस जीव में नम्रता, दया जैसे गुण होंगे वह सब जीवों, सब धर्मों को समान जानेगा, सब धर्मों का सत्कार करेगा। भक्त कबीर जी कहते हैं कि कई लोग अपने मत को सच्चा साबित करने के लिये वाद-विवाद करते हैं। वे ज़रा अपने मन में विचार करके देखें कि हिंदू-मुसलमान कहां से पैदा हो गये? किसने ये रास्ते बनाये? सब लोग प्रभु ने ही पैदा किये हैं। वो किसी के साथ भेदभाव नहीं करता। मात्र जाति-आधारित होने से ही स्वर्ग-नरक नहीं मिलता :

हिंदू तुरक कहा ते आए किनि एह राह चलाई ॥
दिल महि सोचि बिचारि कवादे भिसत दोजक पाई ॥
काजी तै कवन कतेब बखानी ॥
पढ़त गुनत ऐसे सभ मारे किनहूं खबरि न जानी ॥ *(पन्ना ४७७)*

भक्त कबीर जी कहते हैं कि हे भाई! धार्मिक पुस्तकों का विवाद छोड़ो। मैंने तो एक प्रभु का आश्रय लिया है। कई वाद-विवाद में उलझकर व्यर्थ में अपना जीवन गंवा देते हैं :

छाडि कतेब रामु भजु बउरे जुलम करत है भारी ॥
कबीरै पकरी टेक राम की तुरक रहे पचिहारी ॥ *(पन्ना ४७७)*

भक्त कबीर जी काजी को संबोधित करते हुए कहते हैं कि हम मसकीन (निमाणे) लोग हैं। हमें भी तो प्रभु ने ही बनाया है। मज़हब (धर्म) का सबसे बड़ा मालिक तो प्रभु है। वह किसी पर धक्का करने की आज्ञा नहीं देता। काजी तेरी बातें ठीक नहीं हैं। रोजा रखने, नमाज पढ़ने, कलमा कहने से बहिश्त नहीं मिल जाता। प्रभु तो मनुष्य के हृदय में है। वह उसी को मिलता है जो यह बात समझ लेता है। जो मनुष्य न्याय कर रहा है, जो प्रभु को प्रज्ञा से पहचानता है, वह मानो कलमा पढ़ रहा है। जो कामादि को वश में कर लेता है वह मानो मुस्सला बिछा रहा है, वही मजहब को पहचानता है। जब मनुष्य हउमै (द्वैत, मैं, मेरी) को त्यागकर, प्रभु के वास्तविक स्वरूप को पहचानकर दूसरों को अपने जैसा समझता है तभी बहिश्त का सांझीवाल बन सकता है। भक्त कबीर जी के प्रभु दशरथ-पुत्र श्रीराम नहीं, बल्कि सत्य, सर्वव्यापी, निर्गुण, निराकार, परमात्मा हैं। भक्त कबीर जी कहते हैं कि जो लोग माथे पर तिलक लगा लेते हैं और हाथ में माला पकड़ लेते हैं, भाव धार्मिक पहरावा बना लेते हैं और समझते हैं कि प्रभु उनके वश में हो गया है, वे प्रभु को मात्र खिलौना समझ लेते हैं कि वो उनके अनुसार चलेगा। भक्त कबीर जी के अनुसार देवी-देवताओं की पूजा करना, उनके आगे फूल चढ़ाना व्यर्थ है। प्रभु-भक्ति के बिना अन्य सब पूजा-अर्चना व्यर्थ है :

माथे तिलकु हथि माला बानां ॥
लोगन रामु खिलउना जानां ॥ (पन्ना ११५८)

संक्षेप में भक्त कबीर जी के अनुसार मुसलमान समझते हैं कि खुदा सिर्फ काबे में रहता है। यदि ऐसा है तो बाकी देश किसका है? हिंदू समझता है कि प्रभु का निवास मात्र मूर्ति में है। भक्त कबीर जी के अनुसार "दुह महि ततु न हेरा ॥" ब्राह्मण एकादशी का व्रत रखते हैं और मुसलमान रोजे। यदि ऐसा करना सफल है तो बाकी महीने महत्त्वहीन हो जाते हैं। भक्त कबीर जी कहते हैं :

कबीरु पूंगरा राम अलह का सभ गुर पीर हमारे ॥
कहतु कबीरु सुनहु नर नरवै परहु एक की सरना ॥
केवल नामु जपहु रे प्रानी तब ही निहचै तरना ॥
(पन्ना १३४९)

भक्त कबीर जी कहते हैं कि समस्त जीवों में एक प्रभु को देखो तो स्वयं सारे वैर-विरोध समाप्त हो जायेंगे :

सरब भूत एकै करि जानिआ चूके बाद बिबादा ॥
कहि कबीर मै पूरा पाइआ भए राम परसादा ॥
(पन्ना ४८३)

वाद-विवाद के लिए वेद-कुरान के हवाले देकर बातें करनी व्यर्थ हैं। लोग ज्ञान-प्रदर्शन करते हुए खुश हो-होकर बहस करते हैं। भक्त कबीर जी कहते हैं कि मैं बहस की खातिर तुम्हारी बहस वाली विद्या नहीं पढ़ता, न ही धार्मिक विवाद करता हूं अर्थात् आत्मिक जीवन के लिए मैं कोई विद्वता भरी धार्मिक चर्चा की आवश्यकता नहीं समझता :

बिदिआ न परउ बादु नही जानउ ॥
(पन्ना ८५५)

भक्त कबीर जी ने धर्म के ठेकेदारों द्वारा आडंबरयुक्त क्रियाओं में उलझे हुए सभी मनुष्यों को धर्म का वास्तविक स्वरूप समझाने का यत्न किया। उन्होंने आदर्श धर्म के लिए उच्च नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों को आधार मानते हुए धार्मिक संकीर्णता और असमानता वाले सामाजिक प्रबंध के दमनकारी प्रभाव से स्वतंत्र कराने के लिए एकता, प्रेम, सत्य का संदेश दिया है।

उपरोक्त अध्ययन के आधार पर हम डॉ.

आर्य प्रसाद त्रिपाठी के इस कथन से पूर्ण रूप से सहमत हैं कि "हिंदू-मुसलमान में जो संघर्ष चल रहा था उसमें से आग की भयानक लपटें निकल रही थीं। इन लपटों को शांत करने के लिए भक्त कबीर जी के शांति-संदेश ने जल-धारा का कार्य किया है। भक्त कबीर जी का अनूठा कदम था, जिसके द्वारा दो विभिन्न संस्कृतियों को जोड़कर मानवतावाद की स्थापना की गई। भक्त कबीर जी के इस मानव प्रेम में समाज का पुनर्त्थान है।"[२]

डॉ. सरनाम सिंह शर्मा भी डॉ. आर्य प्रसाद त्रिपाठी की उपरोक्त विचारधारा से मिलते-जुलते विचार प्रस्तुत करते हुए कहते हैं कि "भक्त कबीर जी ने स्पष्ट कहा है कि कोई भी धर्म झूठ बोलना नहीं सिखाता। झूठे आचरण की शिक्षा देने वाला धर्म धर्म हो ही नहीं सकता। उन्होंने धर्म के उचित दायित्व को सामाजिक संदर्भ में उभारा। वे चाहते थे कि असत्य मूल्य सामाजिक गति को धीमा न कर दें, इसलिए उन्होंने मध्ययुगीन समाज की आधार-भूमि के पुन: सृजन का प्रयास किया।"[३]

भक्त कबीर जी ने अपने समय की परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए धर्म को बाल की खाल उतारने वाले लोगों के घेरे से बाहर निकालकर सर्वसाधारण तक पहुंचाने का प्रयास किया। भक्त कबीर जी कटुता को मिटाकर भाईचारे की भावना का प्रयास करना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने धार्मिक पुस्तकों के कोरे सतही ज्ञान के आधार पर उपजी एकतरफा संकीर्णता को दूर करने का यत्न किया है। उन्होंने धार्मिक वाद-विवादों से ऊपर उठकर सभी जीवों में प्रभु, अल्लाह, राम को सर्वोच्च हस्ती माना जो सब जीवों, समस्त सृष्टि का रचयिता है, जिसके स्मरण से सभी द्वैत समाप्त हो जाते हैं। भक्त कबीर जी के अनुसार, जिस व्यक्ति के हृदय में जीवन के उचित कार्य की सूझ है वहां कोई खतरा, कोई कठोरता नहीं रह जाती। जिस हृदय में अभी बेरहमी है वहां अभी 'अलहु रामु' का निवास नहीं हुआ :

जह अनभउ तह भै नही जह भउ तह हरि नाहि ॥
कहिओ कबीर बिचारि कै संत सुनहु मन माहि ॥
(पन्ना १३७४)

भक्त कबीर जी ने अल्लाह और राम दोनों को एक मानकर उनकी आराधना की। उन्हें आध्यात्म के उस चरम शिखर का अनुभव हो गया जहां सभी भिन्नताएं, विरोध, अवरोध, द्वैत, अद्वैत में प्रतिष्ठित हो जाते हैं। उन्होंने जात-पात, ऊंच-नीच, अमीर-गरीब के सभी वैमनस्यों को मिटाकर मानवीय मूल्यों की स्थापना पर ज़ोर दिया। उन्होंने माना कि जब जीव को "अवलि अलह नूरु उपाइआ कुदरति के सभ बंदे" तथा "कबीर पूंगरा राम अलह का" का ज्ञान हो जाता है, तब जीवन के वास्तविक मनोरथ का पता चल जाता है और जीव के सभी द्वंद समाप्त हो जाते हैं और सवत्र सर्वव्यापी धर्म का प्रसार हो जाता है :

कहु कबीर सुखि सहजि समावउ ॥
आपि न डरउ न अवर डरावउ ॥ (पन्ना ३२७)

संदर्भ सूची :-

१. डॉ. गुरनाम कौर (बेदी), गुरू ग्रंथ साहिब विच दरज बाणी दा आलोचनातमक अधिऐन, गुरु नानक देव यूनीवर्सिटी, श्री अमृतसर, १९८७, पृष्ठ १२३-२४

२. कबीर साहित्य का सांस्कृतिक अध्ययन, सरोज प्रकाशन, इलाहाबाद, १९७४, पृष्ठ २५६

३. कबीर : एक विवेचन, हिंदी साहित्य संसार, दिल्ली, पृष्ठ ३३६



समाज-सुधारक भक्त कबीर जी

*- डॉ. मधु संधु**

मध्य काल सांस्कृतिक संकट का युग है, सामाजिक मूल्यों की खोज का युग है, इसीलिए भक्त कबीर जी का आध्यात्मिक दर्शन भी सन्यासोन्मुख न होकर समाजोन्मुख है। उन्होंने समाज को समझा, परखा, उससे सीखा और आदर्श शिक्षक की तरह उसी समाज को बहुस्तरीय चेतना दी। लगभग ६०० वर्ष पहले कहे गए उनके वचन आज भी समाज को जागृत करते हैं, भिन्न विश्वासों, अंध-विश्वासों के बीच मानवीय मूल्यों की बात करते हैं, खंडन का नहीं मंडन का पक्ष लेते हैं, सामाजिक विकारों के प्रति जनमानस को सचेत करते हैं, विश्वबंधुत्व की अवधारणा को पुष्ट करते हैं। उपयोगितावाद और बाज़ारवाद के इस युग में उनके मूल्यान्वेषण और मूल्यास्थापन का विशेष महत्त्व है। उनका दर्शन "सार सार को गही लियो, थोथा दई उड़ाओ" का रहा है।

भक्त कबीर जी की बाणी में सामाजिक व्यवस्था और धार्मिक रूढ़ियों पर तीव्र प्रहार मिलते हैं। वे मानवतावादी थे। धर्मगत, जातिगत, वंशगत, अर्थगत, विश्वासगत, शास्त्रगत भेदभाव का उन्होंने खंडन किया; आडंबर, पाखंड, मिथ्याचार, कुप्रथा, वाह्याचार, छुआछूत पर प्रहार किए; वर्गहीन समाज की कल्पना की। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र जैसे भेद उन्हें मान्य नहीं थे। हिंदू-मुस्लिम, वैष्णव-संत, अमीर-गरीब में उनके लिए कोई भेद नहीं था। सह-अस्तित्व में उनका विश्वास था। उन्होंने सदाचार को सर्वोपरि माना। "हरि को भजै सो हरि को होई" में उनका चिंतन-दर्शन स्पष्ट होता है।

भारत भिन्न धर्मावलंबी देश है; अनेकता में एकता रखने वाला देश है। भक्त कबीर जी के समय में अनेक मत प्रचलित थे। भक्त कबीर जी ने माना कि हर धर्म का लक्ष्य एक ही है। ईश्वर हर मनुष्य में बसता है। उन्होंने हर मानव में हरि बसता कहकर मानव धर्म की व्याख्या की। भक्त कबीर जी की बाणी प्रत्येक को प्रभावित करती है। भक्त कबीर जी कर्मयोगी थे। समाज-सुधार के लिए मानो वे सिर पर कफ़न बांधकर चल पड़े थे।

उनकी बाणी स्वांत:सुखाय नहीं, समाज-सुखाय है; आत्म-संबोधन नहीं, लोक-संबोधन है। उन्होंने तथाकथित उच्च वर्ग के षड़यंत्र को पहचाना। उन्होंने 'आंखिन देखी' पर विश्वास किया। अनुभव का प्रकाश उनके लिए सब कुछ था। चेतन्य मन और जागत बुद्धि से भक्त कबीर जी ने समाज के गलत-ठीक को पहचाना :

नगन फिरत जौ पाईऐ जोगु ॥ बन का मिरगु मुकति सभु होगु ॥१॥
किआ नागे किआ बाधे चाम ॥ जब नही चीनसि आतम राम ॥१॥रहाउ॥
मूड मुंडाए जौ सिधि पाई ॥ मुकती भेड न गईआ काई ॥२॥
बिंदु राखि जौ तरीऐ भाई ॥ खुसरै किउ न परम गति पाई ॥३॥
कहु कबीर सुनहु नर भाई ॥ राम नाम बिनु

*१३, प्रीत विहार, डाक : आर. एस. मिल, जी. टी. रोड, श्री अमृतसर-१४३१०४, मो: ९८७६२-५१५६३

किनि गति पाई ॥४॥ . . .
किआ जपु किआ तपु किआ ब्रत पूजा ॥ जा कै रिदै भाउ है दूजा ॥१॥
रे जन मनु माधउ सिउ लाईऐ ॥ चतुराई न चतुरभुजु पाईऐ ॥१॥रहाउ॥
परहरु लोभु अरु लोकाचारु ॥ परहरु कामु क्रोध अहंकारु ॥२॥
करम करत बधे अहंमेव ॥ मिलि पाथर की करही सेव ॥३॥
कहु कबीर भगति करि पाइआ ॥ भोले भाइ मिले रघुराइआ ॥ (पन्ना ३२४)

भक्त कबीर जी कपड़ा बुनने का व्यवसाय किया करते थे। भक्त कबीर जी को समाज के तथाकथित कमज़ोर वर्ग जुलाहे से सम्बंधित माना जाता है। समाजिक वर्गभेद उन्हें जीवन भर बेचैन किए रहता था। उनका लक्ष्य विश्व-मानवता में हर आदमी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाना था। उनकी बाणी में विद्रोह ही नहीं, लोक-चिंतन भी है :

जौ तूं ब्रहमणु ब्रहमणी जाइआ ॥
तउ आन बाट काहे नही आइआ ॥
तुम कत ब्राहमण हम कत सूद ॥
हम कत लोहू तुम कत दूध ॥३॥
कहु कबीर जो ब्रहमु बीचारै ॥
सो ब्रहमणु कहीअतु है हमारे ॥ (पन्ना ३२४)

उनके इस रचनात्मक विद्रोह के पीछे 'जीयो और जीने दो' का सिद्धांत है। भक्त कबीर जी की बाणी में क्रांति की तीखी धार है। उनकी भाषा आम आदमी की भाषा है। यह पंचमेल सधुक्कड़ी भाषा उनकी दूरदृष्टि और राष्ट्रीय एकता की सूचक है। उनकी वाणी लोकवाणी है। देखने में उनकी भाषा भले ही अति सरल हो, लेकिन इसमें समाई अनेकार्थी व्यंजना इसके भीतर समाई क्रांति के ज्वालामुखी का विस्फोट करती है।

भक्त कबीर जी सत्यवीर, कर्मवीर और धर्मवीर थे। उन्होंने इतिहास की, जीवन की धारा बदल दी। उनकी उच्चरित बाणी साहित्यविदों को झकझोरती है, प्रभु-आस्था जगाती है। उनका व्यक्तित्व आम जन को रास्ता दिखाता है। आज जिस प्रकार यह प्रचंड भौतिक और यांत्रिक युग मानवता को निष्कासित कर रहा है, उससे भक्त कबीर जी की बाणी में आए सार्थक जीवन-स्थितियों के संकेत मनुष्य को सकारात्मक ऊर्जा देते हैं। भक्त कबीर जी का मूल स्वरूप समाज-सुधारक का है।



अनुरोध

'गुरमति ज्ञान' सिक्ख इतिहास तथा गुरबाणी में दर्ज शिक्षाओं द्वारा मानव समाज का मार्गदर्शन करती धार्मिक पत्रिका है। गुरबाणी के सम्मान को मुख्य रखते हुए 'गुरमति ज्ञान' के पाठक साहिबान से अनुरोध है कि वे 'गुरमति ज्ञान' को पढ़ने के बाद इसे न तो रद्दी में बेचें तथा न ही ऐसी जगह पर रखें जहां इसकी उचित संभाल न हो सके। पत्रिका को यदि घर में संभालकर रखने की उचित व्यवस्था न हो तो पढ़ने के बाद इसे किसी मित्र, रिश्तेदार आदि को दे दें अथवा किसी गुरुद्वारा साहिबान या पुस्तकालय में पहुंचा दें।

-संपादक।

बाबा बंदा सिंघ बहादर का विजय अभियान

-डॉ. परमवीर सिंघ*

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी द्वारा सृजित खालसा पंथ में बाबा बंदा सिंघ बहादर एक ऐसा अमूल्य हीरा है जिसने सिक्ख पंथ के लिए अपनी शहादत दे दी, किंतु ज़ालिम हकूमत के आगे हार न मानी। खालसा जत्थेबंदी में शामिल होकर इस जरनैल ने कहते-कहाते मुगल जाबिरों के मुंह मोड़ दिये तथा अपने अंतिम समय तक उन जीवन-मूल्यों की बहाली के लिए जद्दोजहद करता रहा जिनकी रखवाली के लिए दशम गुरु जी ने उसको थापना दी थी। दक्षिण से चलकर पंजाब में आए इस जरनैल को सिक्ख इतिहास के एक योद्धा के रूप में जाना जाता है, जिसके आने पर इस धरती के साधारण लोगों को सुख तथा शांति का जीवन जीना नसीब हुआ था।

गुरु साहिब से 'खंडे की पाहुल' प्राप्त करने के बाद वह खालसा जत्थेबंदी का अंग बन गया। इस घटना पर टिप्पणी करते हुए भाई स्वरूप सिंघ ने लिखा है कि "सतिगुरां अपने दसत मुबारक से कंघा, करद (किरपाण), कड़ा तथा कच्छा (कछहिरा) पहनाये। सिर ते छोटी दसतार-- केसकी सजा बैरागी से सिंघ रूप मैं लै आंदा। माधोदास ढाला, श्री साहिब गातरे सजा नेजा पकर गुरु जी से नमसकार करके सामने खला होई गिआ। सतिगुरां इसे, भाई दया सिंघ आदि सिक्खां को गैल लै अपने पावन हाथों से खंडे की पाहुल दे के बैरागी से सिंघ सजा दित्ता। श्री मुख थीं माधोदास से बंदा सिंघ नाम राखा, सिंघां सति श्री अकाल के जैकारिआं से असमान गुंजा दित्ता।"[१] यहां से बाबा बंदा सिंघ बहादर का पंथक जीवन आरंभ होता है जिससे दुनिया के इतिहास में वो प्रमुख सिक्ख के तौर पर उजागर होकर सामने आया।

गुरु जी ने उसको संत के साथ-साथ सिपाही बनने की प्रेरणा देकर उसके अंदर वीर-रसी रुचियों तथा प्रवृत्तियों को उजागर करते हुए उसको तीर-कमान पकड़ाया और हमेशा नैतिक, सामाजिक, राजनैतिक जीवन-मूल्यों के लिए जूझने का आशीर्वाद दिया। ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल बताते हैं कि श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने माधोदास को बैरागी से खालसा बनाते हुए उनको अनेक वरदानों से सरशार कर दिया। ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल के शब्दों में, "टूटी हुई 'कमान' की जगह तुझे न टूटने वाली 'कमान' देते हैं। टूटी हुई कानियों (सेंठा) की जगह तुझे जालिमों का जुल्म तोड़ने वाले तीर बख़्शिश करते हैं। पहले तू निर्बल जीवों का शिकार करता था, अब अत्याचारी जालिमों का शिकार कर। आज से तुझे गरीबों का सहाई 'खालसा' बनाते हैं।"[२] खालसा सजाने के उपरांत गुरु जी ने पांच प्रमुख सिंघ देकर उसको पंजाब की ओर रवाना किया ताकि जुल्म की हकूमत को मात पाई जा सके। इसका विस्तारपूर्वक वर्णन करते हुए डॉ. गंडा सिंघ बताते हैं कि "पंजाब की तरफ भेजने से पहले श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने बाबा बंदा सिंघ बहादर को अपने

*रीडर, सिक्ख विश्व कोश विभाग, पंजाबी यूनीवर्सिटी, पटियाला-१४७००२, मो. ९८७२०-७४३२२

पास बुलाकर 'बहादुरी' का खिताब दिया; पांच तीर अपने तरकश में से बख़्शे तथा उसकी सहायता के लिए भाई बिनोद सिंघ, भाई काहन सिंघ, भाई बाज सिंघ, भाई दइआ सिंघ तथा भाई रण सिंघ 'पांच प्यारे' स्थापित किए तथा बीस अन्य शूरवीर सिंघ भी दिये। एक निशान साहिब एवं नगाड़ा भी बख़्शिश किया जो उसकी सांसारिक सत्ता की वाह्यमुखी निशानियां थीं।"[३]

गुरु जी की निशानियां लेकर बाबा बंदा सिंघ बहादर पंजाब की ओर बढ़ा तथा लोगों में दृढ़ व विश्वसनीय सिक्ख के रूप में उस समय प्रकट हुआ जब उसने गुरमति सिद्धांतों के अनुसार जन-कल्याण तथा दबे-कुचले लोगों की रखवाली का कार्य प्रारंभ किया। प्राथमिक रूप से पंजाब पहुंचने पर उसने जो प्राप्तियां कीं उनका जिक्र करते हुए भाई रतन सिंघ (भंगू) बताते हैं :

जेकर कोई दुखीआ आवै,
कर अरदास तिस दूख मिटावै।
वाहिगुरू का जाप जपावै,
जो मांगै तिस सोऊ दिवावै।
ऐसी जग मैं पर गई धांक,
आइ मिलैं राणा औ रांक।
दूरहि ते जो निंदत आवै,
हुइ नेड़ै वहु चरनी पावै।
जहि बंदा आइ डेरा करे,
काढ मोहर सो तहिं बहु धरै।
दीवै पावै तेली तेल,
इक मोहर तिह देवै मेल।
ठूठी भांडा लयावै घुमयार,
देवै मोहर कढ खीसयों डार।
लकड़ी चूहड़ो लयावै जोई,
मोहर खीसयों देवै ओई ॥

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ १३०)

बाबा बंदा सिंघ बहादर को लोगों का सहयोग प्राप्त हो रहा था। गुरु जी के आदेशों का पालन करता हुआ वो पंजाब की ओर बढ़ रहा था। बहुत सारे वे लोग भी बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ आ गए जो या तो समय की हकूमत के सताये हुए थे या लूटमार की नीयत रखते थे। लूटमार की नीयत रखने वाले लोग ज्यादा समय तक बाबा जी के साथ न रह सके। बाबा जी ने तो गांवों में से चोर-डाकुओं की टोलियों के हमलों को रोककर उनको योग्य सजाएं भी दीं। भाई रतन सिंघ (भंगू) बताते हैं :

तौ लौ धाड़ पिंड आइ वड़ी,
बंदै वल सभ देखै खड़ी।
उठ बंदे कही मारो धाड़,
मारन आए तिनै लयो मार।
यौ सुनि सिंघन हल्ला कीयो,
पकड़ स्रदार धाड़ को लीयो।
औ जो उसै छुडावन आवै,
सोऊ ऊहां आप दस जावै।
ओइ मारैं सेले तलवार,
ढीमन संग सिंघ लेवैं मार।

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ १३१)

बाबा बंदा सिंघ बहादर की अगुआई से लोगों के मन में उत्साह पैदा हो रहा था और वे मुगलों के डर से मुक्त होकर उसका साथ देने लग गए थे। उसने भी साधारण लोगों की रक्षा करके उनके अंदर यह आत्म-विश्वास उजागर कर दिया था कि मुगल अजेय नहीं हैं। कई ज़ालिम हाकिमों को करारी हार देकर बाबा जी ने मासूम जनता को मुगलों के खूनी पंजे में से आज़ाद करवाया था। श्री गोकुल चंद नारंग के अनुसार, "उसकी शख़्सियत ग़ैर-मुसलिम लोगों में इस तरह प्रचारी जा रही थी जैसे हिंदू उसको (बाबा जी को) मुगलों को

उनके गुनाहों की सजा देने के लिए परमात्मा की तरफ से भेजा हुआ अवतार समझने लग गए। दुखी हिंदू उसके पास सहायता के लिए गए जो इच्छापूर्वक तथा सफलता से दी गई। इस तथ्य ने सिक्ख-सत्ता की बढ़ोतरी में भारी योगदान डाला।"[४]

बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा ज़ालिमों को सोधने के किए कारनामे उसकी शख़्सियत को साधारण लोगों में सम्मान दिलाते हैं, क्योंकि उसने समय की मज़बूत मुगल हकूमत से टक्कर लेकर जुल्म का शिकार हो रही गैर-मुसलिम जनता को भारी राहत दिलाई थी। उसने समाज-सुधार के काम आरंभ किए और उन्हें गुरमति की विचारधारा के अनुकूल लागू करवाया। समाज-सुधार के कार्य करते समय उसके द्वारा किए गए कुछ प्रमुख युद्धों का यहां संक्षेप में वर्णन किया जा रहा है :

समाणा पर विजय : बाबा बंदा सिंघ बहादर का प्रमुख निशाना सरहिंद था, जहां के हाकिम वज़ीर ख़ान ने सबसे ज्यादा जुल्म किया था। सरहिंद लाहौर तथा दिल्ली के मध्य मुगलों की शक्ति का एक बड़ा केंद्र था। बाबा बंदा सिंघ बहादर वज़ीर ख़ान पर हाथ डालने से पहले एक तो उसके इर्द-गिर्द फैली शक्ति को ख़त्म करना चाहता था तथा दूसरा, तब तक उसे माझा तथा दुआबा उपक्षेत्र से बुलावा भेजकर बुलाये सिक्ख जत्थों के आकर मिलने के लिए समय मिल जाना था। बाबा बंदा सिंघ बहादर ने कुछ छोटे-छोटे इलाके जीतने के बाद समाणा पर हमला कर दिया। समाणा पर हमला करने का कारण बताते हुए डॉ. गंडा सिंघ कहते हैं कि "गुरु तेग बहादर साहिब को दिल्ली में शहीद करने वाला सैयद जलालुद्दीन समाणा का रहने वाला था और सरहिंद में साहिबजादों को जिबह करने अर्थात् असहनीय यातनायें देकर शहीद करने वाले जल्लाद-- शाशल बेग व बाशल बेग भी समाणा के ही थे। इसलाम कबूल करने से इन्कार करने वालों का कत्ल चूंकि इसलाम की एक धार्मिक ख़िदमत समझी जाती है, इसलिए इस सेवा के यश के हकदार सैयदों को समझा जाता था। इसी कारण धार्मिक जल्लाद सैयद होते थे। समाणा इस इलाके का बड़ा रईस शहर था। ख़्याल किया जाता था कि इस पर आक्रमण करने से एक तो सारा इलाका दहल जायेगा और दूसरा, यहां से इतना धन मिल जायेगा, जिससे अगली मुहिमों का खर्च आसानी से हो जायेगा।"[५] समाणा रईसों का शहर माना जाता था। यहां वे अमीर और अफ़सर लोग रहते थे, जिनको बादशाही दरबार से विशेष पदवियां तथा जागीरें प्राप्त थीं। शहर की सुरक्षा एवं मजबूती के मद्देनज़र वहां के मुगल करिंदों को बिलकुल भी इस बात का एहसास नहीं था कि कोई इन पर हमला कर सकता है। अहंकार ने इनको बाबा बंदा सिंघ बहादर की शक्ति तथा जोश का अनुमान लगाने से रोक लिया। सिक्खों को तुच्छ जानकर ये असावधान हुए रहे। इनको उस समय पता चला जब बाबा बंदा सिंघ बहादर का लशकर विद्युत की तीव्रता से इन पर आ धमका।

बाबा बंदा सिंघ बहादर का हमला इतना जबरदस्त था कि शहरवासियों को संभलने का मौका ही न मिला, जिसको जहां रास्ता मिला, वह अपनी जान बचाने के लिए उधर ही भाग उठा। बाबा बंदा सिंघ बहादर का समाणा के बाद अगला प्रमुख निशाना सरहिंद था जिसमें हिस्सा लेने के लिए हर सिक्ख अधीर था। बाबा बंदा सिंघ बहादर को अपनी ताकत का अंदाज़ा था और वो मझैलों एवं दुआबियों के साथ आ

मिलने का इंतजार कर रहा था, जिनको मलेरकोटला की फौजों ने सतलुज के पार रोका हुआ था। उनके साथ आ मिलने तक बाबा बंदा सिंघ बहादर ने अन्य क्षेत्रों को जीतने की ओर ध्यान केंद्रित किया तथा सढौरा उनमें से एक था।

सढौरा पर विजय : ज़ालिमों को सोधने के साथ-साथ बाबा बंदा सिंघ बहादर द्वारा समाज-सुधार की आरंभ की गई नीति से आम लोगों में बाबा बंदा सिंघ बहादर के प्रति विश्वास की भावना प्रफुल्लित हुई थी। हर आम-खास के मन में यह भावना कायम होने लगी थी कि बाबा बंदा सिंघ बहादर की अगुआई में उनका इलाका सुरक्षित रह सकता है। लोगों में कायम हुई इस भावना से बाबा जी का मनोबल और भी बढ़ा तथा उनका आम लोगों के साथ भरपूर सम्पर्क कायम होना शुरू हो गया। बाबा बंदा सिंघ बहादर की जुल्म विरोधी नीति ने बहुत सारे दबे-कुचले तथा ग़मगीन हालत में ज़िंदगी बसर कर रहे पीर बुद्धू शाह के शिष्यों के जीवन में आशा की किरण जगाई। पीर बुद्धू शाह के कातिल उसमान ख़ान के बारे में जब बाबा जी को पता चला तो उसका खून खौल उठा। वहां के हिंदुओं द्वारा भी उसमान ख़ान तथा उसके साथियों के खिलाफ़ बाबा बंदा सिंघ बहादर को शिकायत मिली थी कि "उसमान ख़ान के हुक्म से हिंदुओं के घरों में गाय कत्ल की जाती हैं तथा रक्त के छींटे हिंदुओं के चौकों में तथा कई बार मुंह पर मारे जाते। उनसे दोगुना चंदा लिया जाता, धार्मिक रस्में न करने दी जातीं तथा मुर्दे जलाने की जगह हुक्मन दबाए जाते हैं। यहीं बस नहीं, हिंदू स्त्रियों की जबरन बेइज्जती की जाती है। इन पापों के कारण सिंघों को सढौरा पर तेग उठानी पड़ी।"[६]

बाबा बंदा सिंघ बहादर ने जब सढौरा पर हमला किया तो हाकिमों के सताये हुए वहां के निवासी भी इसमें शामिल हो गए थे। हाकिमप्रस्तों को बाबा बंदा सिंघ बहादर ने सख़्त सजाएं दी थीं, जिससे साधारण लोगों ने राहत महसूस की थी और उनके मन में बाबा बंदा सिंघ बहादर के प्रति बहुत सत्कार बढ़ गया था।

सरहिंद पर विजय : सरहिंद के नवाब वज़ीर ख़ान ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के दो छोटे साहिबजादों को शहीद किया था। किसी भी हकूमत द्वारा की गई यह जुल्म की शिखर थी जिसने पांच तथा सात वर्ष के छोटे बच्चों को भी नहीं बख़्शा। शाही दरबार में मलेरकोटला के नवाब ने इस अमानवीय कार्य का विरोध किया। सिक्खों के मन में तो जुल्म की इस शिखर ने भारी रोष की भावना कायम की। बाबा बंदा सिंघ बहादर की पंजाब में आमद ने सिक्खों में एक केंद्रीय लीडरशिप पैदा की। सिक्खों की मनोकामनायें पूरी होने की दिशा की ओर यह एक बड़ा संकेत था। पंजाब के सिक्खों की तरफ बाबा बंदा सिंघ बहादर ने गुरु जी का संदेश भेजा तो बहुत सारे सिक्ख उसकी कमान तले इकट्ठा होने के लिए चल पड़े। उनको रास्ते में रोकने के प्रबंध किए गए तो वे भेस बदल कर बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ मिलने लगे। बाबा बंदा सिंघ बहादर भी सिक्खों के पहुंचने से पहले छोटे-छोटे मुगल सरदारों तथा हमलावरों को सोधकर अपनी शक्ति को एकजुट करने में लगा रहा। इस समय के दौरान बाबा जी ने बहुत सारे छोटे-छोटे नगरों एवं कसबों पर कब्जा कर अपनी सैनिक शक्ति को संगठित कर लिया तथा साधारण लोगों में विश्वास की भावना को कायम किया। इस विजय अभियान से बाबा बंदा सिंघ बहादर तथा उसके साथियों का मनोबल बहुत ऊंचा हुआ।

उसने मुगलों की भयभीत करने की नीति के विपरीत लोगों का विश्वास प्राप्त करने वाली नीति अपनाई। चाहे कि बाबा जी इन छोटी-छोटी कार्यवाहियों में ही अपने आप को उलझाना नहीं चाहते थे किंतु इन जीतों के चलते हुए बाबा बंदा सिंघ बहादर की ताकत बहुत बढ़ गई, जिस पर टिप्पणी करते हुए श्री गोकुल चंद नारंग ने लिखा है : "चाहे ये जीतें छोटी थीं किंतु इनसे बाबा बंदा सिंघ बहादर के अनुयाइयों के हौसले बढ़ गए तथा सरहिंद पहुंचते-पहुंचते हज़ारों अन्य सिक्ख उनके झंडे तले जमा हो गए।"[७] बाबा बंदा सिंघ बहादर को मज़बूत होता देखकर हाकिमों ने पूरी कोशिश की कि सिक्ख बाबा बंदा सिंघ बहादर की कमान तले इकट्ठे न हो सकें, परंतु सिक्खों में गुरु जी के हुकमनामे की पालना करने का तथा बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ मिलने का इतना उत्साह था कि कोई भी जरनैल उनको बाबा बंदा सिंघ बहादर के साथ मिलने से रोक न सका। माझा क्षेत्र के सिक्खों का एक बड़ा जत्था भी मलेरकोटला के नवाब शेर ख़ान को हराकर बाबा जी के साथ आ मिला। श्री गोकुल चंद नारंग ने सिक्खों में पैदा हुए उत्साह के बारे में टिप्पणी करते हुए लिखा है कि "सरहिंद की लड़ाई में भाग लेना धार्मिक कर्त्तव्य समझा जाने लग गया था तथा शहीदी की इच्छा माझा एवं मालवा क्षेत्र में से हज़ारों व्यक्तियों को शामिल होने के लिए खींच लाई थी।"[८]

वज़ीर ख़ान चाहे हकूमत के एक बड़े जरनैल के रूप में जाना जाता था मगर जब उसे बाबा बंदा सिंघ बहादर की अगुआई में सिक्खों के उत्साह के बारे में पता चला तो वो अंदर से डरने लगा। वज़ीर ख़ान के डर का जिक्र करते हुए भाई रतन सिंघ (भंगू) ने लिखा है :

तबहि बजीरै चिंता पई,
हम को बंदा छाडत नहीं।
इस कै पास अहैं दोऊ बीर,
और पंच गुर दीने तीर।
प्रिथमै बंदा काला नाग,
तीर भए तिस फंघे लाग।

(श्री गुर पंथ प्रकाश, पृष्ठ १४०)

बाहरी दिखावे के तौर पर उसने बाबा बंदा सिंघ बहादर को धमकी भरे स्वर में चिट्ठी भेजी, जिसका जिक्र करते हुए ज्ञानी गिआन सिंघ ने लिखा है कि "वज़ीर ख़ान ने कहा, मैं वही (वज़ीर ख़ान) हूं जिसने तुम्हारे गुरु को देश से निकाला है। अब मैं तुझे दीन-दुनिया दोनों से निकालूंगा। अभी गिरे हुए बेरों का कुछ नहीं बिगड़ा। मैं तुझे बैरागी-फकीर-भिखारी जानकर छोड़ता हूं। फकीरों का काम नहीं बादशाहों से टक्कर लेना।" बाबा बंदा सिंघ बहादर ने जवाब दिया, "जिस काम के लिए आया हूं उसे किए बिना नहीं हटता और न ही किसी के मारने से मरूंगा। होगा भी वही जो मेरे गुरु की रज़ा है। मैं तुझे नहीं मारूंगा, तेरे पाप तुझे मारेंगे। हमें हुक्म है, जो लोग ज़ालिम तथा जब्र-जुल्म करने वाले हैं, उनको उनके कर्मों का फल दो।"[९] बाबा बंदा सिंघ बहादर के वाक्यों से स्पष्ट है कि वो बैरागी जीवन पूरी तरह से त्याग कर मानसिक एवं शारीरिक रूप से गुरु का सिक्ख कहलाना पसंद करता था और गुरु जी द्वारा बताए हुए मार्ग पर चलना अपना पहला कर्त्तव्य समझता था। आखिर वो दिन आ गया जिस दिन का सिक्ख बड़ी बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। वज़ीर ख़ान द्वारा मुकाबले के लिए खड़ी की गई एक मजबूत फौज का मुकाबला सिक्खों ने अपने धार्मिक जोश एवं उत्साह से किया। हाकिमों के बड़े-बड़े

हथियार सिक्खों के जोश का सामना न कर सके तथा १२ मई, १७१० ई को हुई इस लड़ाई में सिक्खों की विजय हुई। सरहिंद पर पूरी तरह से कब्ज़ा करके बाबा बंदा सिंघ बहादर ने भाई बाज सिंघ को यहां का सूबेदार एवं भाई आली सिंघ सलौदी वाले को नायब सूबेदार स्थापित कर दिया। सरहिंद की जीत ने सिक्खों का पूरे क्षेत्र में इतना दबदबा कायम कर दिया कि बाबा बंदा सिंघ बहादर को अन्य क्षेत्र फतह करने में कोई मुश्किल नहीं आई। भाई संतोख सिंघ चूड़ामणि ने बाबा बंदा सिंघ बहादर के पूरे इलाके में कायम हुए दबदबे का जिक्र करते हुए लिखा है :

इम बंदे देशन जै पाई।
सभि पर अपनि अमल ठहिराई।
(श्री गुर प्रताप सूरज ग्रंथ, ऐन २, अंसू ११)

'सिख इनकलाब' नामक पुस्तक में स. जगजीत सिंघ ने बाबा बंदा सिंघ बहादर की अगुआई में सिक्खों की चढ़दी कला पर टिप्पणी करते हुए लिखा है कि "खालसे ने बड़ी-बड़ी कुर्बानियां की हैं। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने जो ज्योति जलाई थी, वो प्रचंड हो उठी।"[१०] बाबा बंदा सिंघ बहादर की जीतों ने साधारण लोगों को संकेत दिया कि जुल्म का मुकाबला जन-चेतना द्वारा एकजुट होकर किया जा सकता है; जरूरत है तो केवल मज़बूत इच्छा-शक्ति तथा दृढ़ इरादे की। बड़े से बड़े हथियार भी जनसमूह की ताकत का मुकाबला नहीं कर सकते।

संदर्भ-सूची :

१) भाई स्वरूप सिंघ (कौशिश), गुरू कीआं साखीआं, (संपा.) प्रो. पिआरा सिंघ पदम, पृष्ठ १९९
२) ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, बंदा सिंघ शहीद, पृष्ठ १२
३) डॉ. गंडा सिंघ, बंदा सिंघ बहादर, पृष्ठ १३
४) श्री गोकुल चंद नारंग, सिक्ख मत दा परिवरतन, फुटनोट, पृष्ठ ११२
५) डॉ. गंडा सिंघ, बंदा सिंघ बहादर, पृष्ठ १८
६) ज्ञानी सोहण सिंघ सीतल, बंदा सिंघ शहीद, पृष्ठ ३१
७) श्री गोकुल चंद नारंग, सिक्ख मत दा परिवरतन, पृष्ठ १११
८) उपरोक्त, पृष्ठ १११
९) ज्ञानी गिआन सिंघ, तवारीख गुरू खालसा, भाग-दो, पृष्ठ २०
१०) स. जगजीत सिंघ, सिक्ख इनकलाब, पृष्ठ २०९

(अनुवादक-- स. गुरप्रीत सिंघ भोमा)



कविता

भक्त कबीर जी

भक्त कबीर महान हुए भजवंत।
जिनकी शोभा बहुत बेअंत।
प्रभु-नाम की करते जाप जपाई।
अंबर-सी ऊंची स्वर सजाई।
अंधियारी सदिओं में रोशन-रोशन,
ज्ञान का सूरज दिया चढ़ाई।
जात-पात की थीं कठिन मुश्किलें,
विचार से उनकी जड़ कटाई।
ब्राह्मण के बढ़प्पन का भ्रम तोड़ा,
उसे सच की सच्ची राह दिखाई।
तख़्तो-ताज का कभी भय नहीं माना,
असलियत धर्म-कर्म बांटी रोशनाई।
नहीं कोई हुआ न कभी होगा ऐसा,
युग-युगीन अद्वितीय अमरता पाई।
कबीर साधु संत सद भजवंत।
उनकी शोभा आज भी बेअंत।

-डॉ. सुरिंदरपाल सिंघ, पत्तण वाली सड़क, पुराना शाला, गुरदासपुर-१४३५२१, मो. ९४१७१-७५८४६ 

सिक्ख इतिहास का तीसरा घल्लूघारा : जून, १९८४

- डॉ. राजेंद्र सिंघ 'साहिल'*

सिक्खों के कारनामे हमेशा से ही बेमिसाल और निराले रहे हैं। इनके पास एक ऐसी शहीदी परंपरा है जैसी सारी दुनिया में कहीं नहीं मिलती। सबसे पहले पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी ने अकाल पुरख के 'भाणे' को मीठा करके मानते हुए शहादत दी। फिर आपके पौत्र नवम् पातशाह श्री गुरु तेग बहादर साहिब कश्मीरी हिंदुओं के धार्मिक अधिकारों की रक्षा करते हुए दिल्ली के चांदनी चौक में अपना शीश अर्पित कर गये। इसके बाद दशमेश पिता श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के चारों साहिबजादों की कुर्बानी किसे याद नहीं है!

दुनिया के इतिहास में आम तौर पर व्यक्ति विशेष या उसके पिता-पुत्र, ज़्यादा से ज़्यादा दो ही पीढ़ियों के बलिदान की मिसाल मिलती है। ऐसे उदाहरण भी एक-दो ही हैं, परंतु एक ही परिवार की ओर से इतना लंबा संघर्ष और एक ही परिवार की इतनी पीढ़ियों द्वारा बलिदान का मार्ग अपनाने की एकमात्र ही मिसाल है और वो है सिक्ख गुरु साहिबान व गुरु-परिवार की ओर से स्थापित की गई शहीदी की अद्वितीय परंपरा।

यही वो प्रेरणा थी जिसने शहीदी प्राप्त करने को सिक्खों का पहला शौक बना डाला और यह अनुपम शहीदी परंपरा निरंतर प्रफुल्लित होती चली गई। कहते हैं कि बंद-बंद काटना, खोपड़ी उतारना, चरखड़ियों पर चढ़ाना, देग में उबालना, रूई में लपेट कर जला देना... वगैरह-वगैरह चौंसठ तरीके थे जिनके द्वारा मनुष्य को यातनाएं देकर शहीद किया जाता था। सिक्खों ने लगभग हर तरीके से कुर्बानी दी है।

सिक्खों का यह सारा संघर्ष किसलिए था? क्या उन्हें अपने किसी स्वार्थ की पूर्ति करनी थी? क्या वे धन-दौलत, शक्ति या राज्य हासिल करने के लिए जंग कर रहे थे?

इन प्रश्नों पर ग़ौर करें तो एहसास होता है कि सिक्खों का यह विकट संघर्ष इतने तुच्छ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए नहीं था, बल्कि वे एक अत्यंत ऊंचे आदर्श के लिए जद्दोजहद कर रहे थे। यह आदर्श था-- 'मानवीय हकों की रक्षा।' सिक्ख हमेशा मज़लूमों और उनके अधिकारों के लिए ज़ालिमों के ख़िलाफ़ संघर्ष करते रहे। वे स्वयं भी स्वाभिमानी थे और सारी दुनिया के मनुष्यों को भी स्वाभिमान के साथ जीते हुए देखना चाहते थे।

सिक्खों को सिखाया गया था कि सारे मनुष्य एक ही नूर से उपजे हैं। उनमें कोई फ़र्क, कोई भिन्नता या भेद नहीं है। प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही स्वतंत्र अस्तित्व का अधिकारी है, इसलिए उन्होंने ज़ालिमों को मज़लूमों के हक छीनने से रोका, उनके विरुद्ध युद्ध किए, उन्हें मृत्यु के घाट उतारा और खुद बलिदान दिये।

मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए सिक्खों ने न सिर्फ अनगिनत कुर्बानियां दीं बल्कि दो बड़े 'घल्लूघारे' भी झेले। पहले जून, १७४६ ई में काहनूवान (जिला गुरदासपुर) के जंगल में और फिर फरवरी, १७६२ ई में मलेरकोटला (जिला संगरूर) के निकट कुप्परुहीड़ा में सिक्खों का ज़बरदस्त जानी नुकसान हुआ, पर सिक्ख सदैव अपने उच्च आदर्श के लिए कटिबद्ध रहे।

इस परिप्रेक्ष्य में एक अजीब बात यह भी है कि मानवता की रक्षा हेतु सदैव प्रतिबद्ध सिक्खों के साथ सिक्ख-द्रोही कदम-कदम पर विश्वासघात

*१/३३८, स्वप्नलोक, दशमेश नगर, मंडी मुल्लांपुर दाखा (लुधियाना)-१४११०१, मो. ९४१७२-७६२७१

भी करते रहे। ऐसा ही एक विश्वासघात जून, १९८४ ई में हुआ। यह वो दुर्भाग्यपूर्ण समय था जब सरबत का भला मांगने वाले सिक्खों को धोखे से तबाह करने का षड़यंत्र रचा गया। एक लोकतांत्रिक तौर पर चुनी गई सरकार ने अपने ही वतन के लोगों और उनके सर्वोच्च धार्मिक स्थान पर फौजी हमला कर दिया। मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए सदैव जूझते रहने वाले सिक्खों को पता नहीं किस 'गुनाह' का सबक सिखाने की कोशिश की गई!

४ जून, १९८४ ई को सारे पंजाब में कर्फ्यू लगाकर फौज़ ने 'खाड़कुओं' के विरुद्ध कारवाई करने के बहाने श्री हरिमंदर साहिब परिसर पर हमला कर दिया। हमले का समय भी ऐसा चुना गया जब श्री गुरु अरजन देव जी के शहीदी दिवस के अवसर पर श्री दरबार साहिब में संगत का समुद्र हिलोरे ले रहा था। अंधाधुंध गोलियां चलाई गईं। तोपों, रॉकेटों और मशीनगनों का प्रयोग किया गया। हज़ारों निहत्थे और निर्दोष श्रद्धालुओं को, जो गुरु-घर में मत्था टेक कर गुरु-घर की खुशियां प्राप्त करने आये थे, भून कर रख दिया गया। परिक्रमा निर्दोषों के खून से लथपथ हो गई।

प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बेकसूर सिक्खों की लाशों को कूड़े वाली गाड़ियों में ढोया गया। जून माह की भयंकर गर्मी में लाशें भीषण दुर्गंध छोड़ने लगी थीं। ढोने वालों ने जब लाशें उठाने से इंकार कर दिया तो ज़िला प्रशासन ने उन्हें लाशों में मिलने वाली नक़दी, गहने, घड़ियां आदि अपने पास रखने की छूट दे दी। इस तरह पहले निर्दोषों को क़त्ल किया गया, फिर लाशों की बेइज्जती की गई और उन्हें लूटा भी गया।

यही नहीं, जानबूझ कर श्री हरिमंदर साहिब परिसर का ज़बरदस्त नुकसान भी किया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब को तहस-नहस कर दिया गया। तोशाखाना और सिक्ख रेफ्रेंस लाइब्रेरी को जलाकर राख कर दिया दया। कई महत्त्वपूर्ण प्राचीन चित्र, दुर्लभ दस्तावेज, ऐतिहासिक हुकमनामे, हस्तलिखित ग्रंथ, पुरातन पांडुलिपियां और पुस्तकें आदि नष्ट हो गईं।

तत्कालीन सरकार द्वारा चलाए 'आपरेशन ब्ल्यू स्टार' ख़त्म होने के बाद भी सिक्खों पर अत्याचार जारी रहे। नवंबर, १९८४ ई में प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सिक्ख-विरोधी हिंसा फिर भड़क उठी और एक बार फिर हज़ारों निर्दोष सिक्खों की बलि चढ़ा दी गई।

दिसंबर, १९८४ ई के आम चुनाव में पूरे भारत में जबरदस्त सिक्ख-विरोधी प्रचार किया गया। कहा गया कि वे अलगाववादी हैं और देश की एकता-अखंडता के लिए ख़तरा बन गये हैं। सबसे ज़्यादा दुख की बात यह थी कि यह सब कुछ उन सिक्खों के साथ किया जा रहा था जो अपने जन्म से मानवीय अधिकारों की रक्षा के लिए संघर्ष करते आये थे; जिनके इतिहास में अत्याचार करने का एक भी उदाहरण मौजूद नहीं है; जो प्रतिदिन 'सरबत्त का भला' मांगते रहे हैं; जिन्होंने सारी खलकत को एक ही ईश्वर की संतान माना है, सभी को एक ही पंगत में बैठाकर लंगर छकाया है। सरदार हरी सिंघ नलूआ ने ख़ैबर दर्रे को सिर्फ इसलिए फ़तहि किया था कि उससे होकर हमलावर भारत में न आ सकें और देश तबाही से बचा रहे। आज़ादी की लड़ाई में सिक्खों ने कुर्बानियां इसलिए दी थीं कि सारा देश आज़ाद हो सके, परंतु सिक्ख-द्रोहियों ने सिक्खों की पांच सौ वर्ष की कमाई पर कीचड़ पोतने में जरा भी हिचकिचाहट न की।

आज सिक्ख इतिहास के तीसरे घल्लूघारे-- जून, १९८४ ई के शहीदों को याद करते हुए यह अरदास करनी चाहिए कि सिक्ख सदैव अपनी इंसान-दोस्त नीतियों पर कायम रहें और मानवता की रक्षा के लिए संघर्ष करते रहें।

आज़ाद भारत के माथे पर कलंक : घल्लूघारा जून, १९८४

*-स. गुरदीप सिंघ**

संवत् ५१६ नानकशाही, ज्येष्ठ माह, आग के गोले की तरह दहकता सूर्य, बेतहाशा गर्मी, जून, १९८४ की पहली तारीख, संगत शहीदों के सिरताज, बाणी के बोहिथ श्री गुरु अरजन देव जी की शहादत को समर्पित शहीदी पर्व मनाने में व्यस्त थी। संगत का भारी इकट्ठ, यकायक श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर का संबंध सारे भारत से काट दिया गया। फौज ने श्री दरबार साहिब परिसर को घेरकर बंदूकों, तोपों और अन्य आधुनिक हथियारों का मुंह श्री अकाल तख़्त साहिब की ओर तान दिया। भारतीय फौजों ने टैंकों और गोलों द्वारा श्री अकाल तख़्त साहिब की पूरी इमारत को ध्वस्त कर दिया। तोशाखाना (तोशकखाना) जला दिया गया। सिक्ख रेफ्रेंस लायब्रेरी की तोड-फोड़ की गई। अनेक बहुमूल्य ऐतिहासिक ग्रंथों-पुस्तकों को बोरियों में बंद कर गायब कर दिया गया। श्रद्धालु सिक्खों का नाजायज़ कत्लेआम किया गया। इस सारी कार्यवाई को सरकारी शब्दों में 'ऑपरेशन ब्लू स्टार' का नाम दिया गया। सिक्ख तवारीख में एक और 'घल्लूघारा' जुड़ गया।

श्री हरिमंदर साहिब की दर्शनी ड्योढ़ी के बिलकुल सामने श्री अकाल तख़्त साहिब की पवित्र पांच-मंज़िला भव्य इमारत है, जिसकी महत्ता सिक्ख धर्म में सुप्रीम कोर्ट के रूप में मानी जाती है। श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार द्वारा जारी किए गए हुकमनामों को पूरे सिक्ख समुदाय द्वारा माना जाता है। पूरा सिक्ख समुदाय श्री अकाल तख़्त साहिब के प्रति निष्ठा, श्रद्धा एवं सत्कार रखता है। सुरक्षा बलों ने श्री दरबार साहिब परिसर को कई महीने पहले अपने घेरे में ले लिया था। श्री अकाल तख़्त साहिब तथा श्री दरबार साहिब के साथ लगी हुई बहु-मंज़िला और ऊंची इमारतों पर मोर्चाबंदी कर रखी थी। १ जून, १९८४ ई को दोपहर १२:३० बजे एकदम फायरिंग शुरू कर दी गई जो रात ८:०० बजे तक चलती रही। २ जून की शाम को रेडियो द्वारा पंजाब संबंधी कुछ विशेष एलान प्रसारित होने शुरू हो गए। पंजाब को पहले ही गड़बड़ वाला इलाका बना दिया गया था। पंजाब में शीघ्र ही रेल और सड़क द्वारा आने-जाने पर पाबंदी लगा दी गई। फौजी गाड़ियों के अतिरिक्त सब प्रकार के वाहनों, यहां तक कि साइकिल और पैदल आने-जाने पर भी रोक लगा दी गई। श्री दरबार साहिब को पूरे शहर से अलग कर सील कर दिया गया। पूरे पंजाब पर दो मास का कठोर सैंसर लागू कर दिया गया।

३ जून को गुरुपर्व था। लगभग १०,००० से भी ज्यादा संगत, जिसमें बहुत-से बच्चे, औरतें और बुज़ुर्ग शामिल थे। रात १०:०० बजे के बाद अंदर से किसी को भी बाहर नहीं जाने दिया गया। पूरे पंजाब में ३६ घंटों के लिए कर्फ्यू लगा दिया गया। लोगों के घर से बाहर निकलने पर पूरी पाबंदी लगा दी गई। ४-५ जून को सारा दिन ही गोलियों की बौछाड़ होती रही। फौज ने टैंपल व्यू होटल, ब्रह्म बूटा अखाड़ा, महाराजा रणजीत सिंघ के कार्यकाल में बनाए गए ऐतिहासिक बुंगों के शिखरों को तोपों द्वारा दागकर मिट्टी में मिला दिया।

३०२, किदवाई नगर, लुधियाना--१४१००८, मो: ९८८८१-२६६९०

६ जून को सुबह मंजी साहिब की तरफ से एक हथियारबंद गाड़ी परिक्रमा में आई। फौज ने श्री अकाल तख़्त साहिब पर सीधा टैंकों द्वारा धावा बोलने का निर्णय लिया। छः-सात विजेता टैंक सराय की बीच वाली सड़क पर पंहुच गए। पहले एक टैंक को परिक्रमा में लाया गया जो कि बाबा दीप सिंघ जी शहीद के यादगारी स्थान पर जाकर जमीन में धंस गया। फिर दूसरा टैंक लाया गया। श्री अकाल तख़्त साहिब के अंदर आंसू गैस के कई गोले फेंके गए। टैंक की मशीनगन के गोले दागे। फिर टैंक की मुख्य तोप से (१०५ एम. एम.) 'हैस' नाम की शक्तिशाली गोलियों ने कहर मचा दिया। थोड़े समय में श्री अकाल तख़्त साहिब और दर्शनी ड्योढ़ी के मज़बूत ढांचे को छेदते हुए ऐतिहासिक इमारतों को नष्ट कर दिया।

ऐसोसिएटिड प्रेस, अमेरिका का पत्रकार ब्रह्मा चैलानी (Brahma Chellany) ४ जून, १९८४ ई को दोपहर के बाद दिल्ली से रवाना हुआ। रात को जलंधर ठहरकर ५ जून को श्री अमृतसर पंहुच गया तथा ११ जून, तक वहीं रहा। उसने आंखों देखा हाल का संक्षिप्त वर्णन ('ब्लू स्टार आपरेशन' द्वारा डॉ. महिंदर सिंघ 'ढिल्लों') इस प्रकार लिखा :

"३६ घंटों के लिए कर्फ्यू, जो ३ जून को सारे पंजाब में लगाया गया था, का एलान रेडियो द्वारा कर दिया गया था। शायद सारे देश, विशेष रूप से पंजाब के इतिहास में यह पहला मौका था कि पंजाब के सारे निवासी कर्फ्यू की कैद के अधीन घरों में बंद कर दिए गए। रेल, सड़क, हवाई-यात्रा और अन्य साधनों द्वावा आना-जाना बंद कर दिया। कर्फ्यू का आदेश इतना सख्त था कि यदि कोई इसकी उल्लंघना करे तो उसे मौके पर ही गोली मार देने का आदेश था। पंजाब की सब सड़कों पर फौज गश्त कर रही थी। शहर की बिजली और पानी बंद कर दिया गया था। तोपों के भारी गोलों और मशीनगनों की फायरिंग ने शहर को पूरी तरह से कंपायमान कर दिया। मीलों तक घरों के दरवाजों और खिड़कियों की खटखटाहट की आवाज़ सुनाई दे रही थी। एक भारी और भयानक एकतरफा युद्ध का दृश्य था। बमों की रोशनी से आकाश में उजाला हो जाता था। इस पर भी रेडियो द्वारा सरकारी एलान यही किया जा रहा था कि शहर में अमन और शांति है। ३ जून से ही टेलीफोन, टैलेक्स और डाक-तार सभी बंद कर दिए गए थे। जून मास की भयंकर गर्मी, उस पर यह सितम कि बिजली-पानी बंद, लाशों की दुर्गंध, तोपों और मशीनगनों का धुआं, श्री दरबार साहिब के आस-पास लोगों की सांस घुट रही थी।"

"६ जून की सुबह कमेटी (नगर निगम) की कूड़ा-करकट ढोने वाली गाड़ियों के कर्मचारी लाशों के ढेर को शमशानघाट की ओर ले जा रहे थे। मैं वहां लाशों के ढेरों को देखने चला गया। वहां एक इंचार्ज अफसर ने बताया कि हम २५-३० लाशों का एक ढेरों बनाकर उन्हें जला रहे हैं। गंदगी ढोने वाली गाड़ियों में किसी का सिर, किसी का पांव, हाथ, टांग, केश, बाहर लटक रहे थे। लाशों में बच्चे और स्त्रियां भी थीं। उन सब लाशों को देखकर मैं सारी रात सो न सका। मैं दो बार ९ जून और ११ जून को लाशों का संस्कार होता हुआ देखने गया था। ६ जून से लेकर दिन-रात २४ घंटे लाशों को ढोने का काम हो रहा था। उनका दाह-कर्म किया जा रहा था। जो मारे गए उनकी किसी प्रकार की कोई सूची नहीं थी।"

श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए इस हमले में बहुत-से सिक्ख स्त्री, पुरुष और बच्चे लापता हो

(शेष पृष्ठ ४६ पर)

भाई वीर सिंह

-स. दमनजीत सिंघ*

भाई वीर सिंघ उस महान व्यक्तित्व के मालिक थे जिन्होंने कविता के माध्यम से पंजाबी काव्य-जगत में एक विशेष प्रकार की सौगात प्रस्तुत की थी। गुरु नानक साहिब के दर्शाये गये रास्ते पर चलकर भावात्मक एकता तथा मानवता की भलाई के लिए काम करते रहना उनका ध्येय था।

किसी व्यक्ति ने उनसे एक दिन पूछा, "भाई साहिब! आपकी कविता का मुख्य उद्देश्य क्या है? क्या उसका आपकी ज़िंदगी से कुछ नज़दीकी सम्बंध है?" भाई साहिब इस बात पर मुस्कराये और बोले, *"मानस की जात सबै एकै पहिचानबो ॥* यही मेरा एक मुख्य उद्देश्य है। चाहे आप इसे मेरी कविता का मकसद समझ लें, चाहे इसे मेरी ज़िंदगी का उद्देश्य समझ लें।"

भारतीय संतों-कवियों की परंपरा में अपना विशेष स्थान बना लेने वाले भाई वीर सिंघ इस उत्तर के अनुरूप ही कविता के रचयिता थे। कथनी एवं करनी की एकरूपता ने उन्हें उदार हृदय व सहज स्वभाव वाला बना दिया था। महाराजा रणजीत सिंघ के दीवान श्री कौड़ा मल के घराने में ५ दिसंबर, १८७२ को श्री अमृतसर में जन्म लेकर उन्होंने बचपन से ही साहित्यक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक वातावरण अपने आस-पास महसूस किया था। पिता की साहित्यक रुचि उन्हें विरासत में प्राप्त हुई थी, इसी लिए उन्होंने बचपन से ही साहित्य की तरफ ध्यान देना शुरू कर दिया था।

संस्कृत, फारसी, पंजाबी तथा अंग्रेजी में उन्होंने अच्छी योग्यता हासिल की। उन्होंने सिक्ख संस्कृति, साहित्य तथा इतिहास को नये ढंग से प्रस्तुत किया था। उन्हीं दिनों सिक्खों में सामाजिक तथा राजनीतिक जागृति लाने के लिए 'सिंघ सभा आंदोलन' चल रहा था। वे इस आंदोलन के साथ पूर्ण रूप से जुड़ गये तथा उन्होंने लोक-भावना पैदा करने के लिए हिम्मत व साहस से 'खालसा समाचार' नामक साप्ताहिक पत्रिका प्रकाशित करनी शुरू की।

उनकी कविताओं में प्रकृति के प्रति प्रेम तथा सामाजिक जागरण दोनों के साफ दर्शन होते हैं। पौधे के साथ लिपटी अमरबेल को हटाते समय पौधे की हृदयस्पर्शी पुकार का एक दृश्य देखने योग्य है। वे लिखते हैं :

हाए ना धरीक सानूं,
हाए वे ना मार खिच्चां,
हाए ना विछोड़,
गल लगिआं नूं पापीआ!
पिआरे ना विछोड़ीए वे,
मिले ना निखेड़ीए वे,
आसरे ना तोड़िए वे,
पाड़ीए ना जोड़ीआं!

इसी प्रकार समाज-सेवा के लिए समर्पित व्यक्ति के लिए 'चश्मे-इच्छा बल' द्वारा वे कहते हैं :

सीने खिच्च जिन्हां ने खाधी,

*८८९, फेस-१०, मोहाली-१६००६२

उह कर आराम नहीं बहिंदे।
नेहुं वाले नैणां की नींदर?
उह दिने रात पए वहिंदे।

"जिसके सीने में समाज-सेवा की ललक लग गयी वे आराम से नहीं बैठते। प्रेम से भरी हुई आंखों में नींद नहीं आती। वे आंखें दिन-रात बहती रहती हैं।"

उन्होंने कविता, उपन्यास, कहानी व लेख प्रत्येक विधा पर कलम चलायी और पंजाबी साहित्य के खजाने को अमीर बनाया। कई बहुत कीमती प्राचीन ग्रंथों का भी उन्होंने संपादन किया था। पंडित बाल किशन शर्मा 'नवीन' ने उनकी साहित्यक साधना से प्रभावित होकर उनका हिंदी अनुवाद किया है। भाई वीर सिंघ की 'किक्कर' नामक कविता उच्च कोटि की रचना है। उनकी साहित्यक रचनाओं पर शर्मा जी ने बहुत सुंदर टिप्पणी की है। वे कहते हैं "...परंतु भाई वीर सिंघ केवल कवि ही नहीं थे, वे संत की तरह पूजे भी जाते थे। उनके चारों तरफ हमेशा उनके शिष्यों की भीड़ लगी रहती थी, हालांकि वे बहुत ही शांतिपूर्ण तथा एकांत जीवन व्यतीत करना पसंद करते थे। दुनिया के शोर-शराबे से दूर रहना उनको बहुत अच्छा लगता था। दिखावटपन से उन्हें नफ़रत थी। वे अपने कर्त्तव्यों की भली-भांति पालना करते थे।"

वे सामाजिक जागृति के लिए हमेशा अपने तन-मन से त्याग की भावना रखते थे। उनकी सेवाओं तथा कर्त्तव्यों के लिए भारत सरकार ने उनको 'पद्‌म विभूषण' की उपाधि दी थी। साहित्यक अकादमी ने भी उनकी साहित्यक सेवाओं को भुलाया नहीं। उनके काव्य-ग्रंथ 'मेरे साईआं' को साहित्य अकादमी पुरुस्कार मिला था। वे १० जून, १९५७ को समाज तथा साहित्य की सेवा करते हुए ८५ साल की आयु में परलोक गमन कर गये।

वे हमेशा जीवन में आगे बढ़ने तथा उच्च चरित्र की स्थापना के लिए लगे रहने की प्रेरणा देते रहते थे। उनका प्रेरणाओं से भरा संदेश आज भी मनुष्य जाति के लिए जगमगाते चिराग की तरह रास्ता दिखाता रहता है। उन्होंने कहा है :

उच्चा उठ जमीं तों पिआरे,
तैनूं खंभ रब्ब ने लाए।

और यह भी कहते हैं :

उच्ची नजर ते हिम्मत उच्ची,
दाईआ उच्चा रखीं।

ऐ प्यारे मनुष्य! तू हमेशा पृथ्वी से ऊपर उठकर देख। परमात्मा ने तुझे पंख दिये हैं। जिसके पास ऊंची नज़र तथा ऊंची हिम्मत है, वो नीचे कैसे गिर सकता है?

आज के वर्तमान युग में, जबकि नैतिक तथा सांस्कृतिक मान-सम्मान कम हो रहा है, ऐसे वातावरण में भाई वीर सिंघ की काव्य-रचना [illegible], परंतु भावात्मक एकता से [illegible] वातावरण के लिए प्रेरित करती है।





बंगला देश के ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान

-स. सुरजीत सिंघ*

गुरुद्वारा साहिबान मानव जीवन को सुसंस्कारित, परिष्कृत एवं पवित्र करने का वो माध्यम होते हैं जहां आत्मिक चिंतन द्वारा ईश्वर की आराधना कर सेवा, सिमरन, विनम्रता, मानवता एवं भाईचारे का पाठ पढ़ाया जाता है और जहां से परिवार, समाज, राष्ट्र-धर्म-निर्वाह की सीख प्राप्त होती है। गुरुद्वारा से 'संगत और पंगत' के सिद्धांत द्वारा निर्मल होकर प्राणी सेवा की सर्वोच्चता प्राप्त करता है। दुनियावी विकारों में झुलसते हुए प्राणी को ईश्वरीय कृपा से अमृत रूपी शीतल छाया मिलती है जिससे नाशवान जगत के भौतिक एवं दैहिक तापों में ग्रसित प्राणी को मुक्ति मिलने का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। वो कमल फूल की भांति सांसारिक कीचड़ से ऊपर उठने लगता है।

बंगला देश में प्रसिद्ध ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान 'बंगला देश गुरुद्वारा मैनेजमेंट बोर्ड' के अधीन हैं, जो कि अर्धशासकीय स्तर की संस्था है। इसका मुख्यतया संचालन-नियंत्रण बंगला देश की सरकार ही करती है। श्रद्धा और आस्था के प्रतीक ऐतिहासिक गुरुद्वारा साहिबान की क्रमवार सूची निम्न प्रकार है :

१. गुरुद्वारा साहिब नानकशाही, रामना, ढाका
२. गुरुद्वारा साहिब संगत टोला, बंगला बाज़ार, ढाका
३. गुरुद्वारा साहिब गुरु नानक कुआं, रॉयल बाज़ार, धान मंडी, ढाका
४. गुरुद्वारा साहिब सुथरा शाही, उर्दू बाज़ार, ढाका
५. गुरुद्वारा सिक्ख हरिमंदर साहिब, चौक बाज़ार, चिटगांव
६. गुरुद्वारा साहिब पंजाबी लेन, पहाड़तली, चिटगांव
७. गुरुद्वारा साहिब शिवपुरी, मेमनसिंह
८. गुरुद्वारा साहिब, स्यालहट्ट

इन तीर्थ-स्थलों के स्वामित्व में करोड़ों रुपयों की ज़मीन-जायदाद दर्ज थी, किंतु स्थानीय लोगों के अनाधिकृत कब्ज़ों से अब खुर्द-बुर्द कर दी गई है। इमारतों की हालत भी उचित रख-रखाव के आभाव में अच्छी नहीं रही है।

*५७-बी, न्यू कॉलोनी, गुमानपुरा, कोटा (राज.)-३२४००७

कविता

बेटी

वो दिन होता है शुभ, जब जन्म लेती है बेटी।
घर के आंगन में चार-चांद, लगाती है बेटी।
मां-बाप के गले का हार बनकर,
संसार का उनके श्रृंगार बनकर,
मन के रोम-रोम को आनंदित, करती है बेटी।
गुरु नानक का आशीर्वाद पाकर,
जग की जननी का खिताब पाकर,
जीवन के हर रूप में जीना, सिखाती है बेटी।
माता-पिता के दुखों को हरना जानती है,
ससुराल की जिम्मेदारियों को उठाना जानती है,
दो परिवारों के रिश्तों को, मधुर बनाती है बेटी।
घर के आंगन में चार-चांद, लगाती है बेटी।

-स. रणजीत सिंघ, ग्राम-फत्तेहपुर शुमाली, डाक: बछरायुं, जिला- अमरोहा (उ. प्र.)-२४४२२५. मो ९४१२१-३८०८०

गुरबाणी चिंतनधारा : ६९

सुखमनी साहिब : विचार व्याख्या

*-डॉ. मनजीत कौर**

ग्यारहवीं असटपदी

सलोकु ॥
करण कारण प्रभु एकु है दूसर नाही कोइ ॥
नानक तिसु बलिहारणै जलि थलि महीअलि सोइ ॥
(पन्ना २७७)

प्रस्तुत सलोक में गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि वो परमेश्वर सर्वव्यापी है। सब कुछ का कारण और कर्ता प्रभु स्वयं ही है अर्थात् करने और करवाने वाला परमेश्वर स्वयं ही है, अन्य कोई नहीं। पंचम पातशाह श्री गुरु अरजन देव जी उस पर बलिहार-कुर्बान जाते हैं जो जल-थल, पाताल-लोक में अर्थात् सर्वत्र समाया हुआ है।

असटपदी ॥
करन करावन करनै जोगु ॥ जो तिसु भावै सोई होगु ॥
खिन महि थापि उथापनहारा ॥ अंतु नही किछु पारावारा ॥
हुकमे धारि अधर रहावै ॥ हुकमे उपजै हुकमि समावै ॥
हुकमे ऊच नीच बिउहार ॥ हुकमे अनिक रंग परकार ॥
करि करि देखै अपनी वडिआई ॥ नानक सभु महि रहिआ समाई ॥१॥

ग्यारहवीं असटपदी की पहली पउड़ी में पंचम पातशाह धन्य-धन्य श्री गुरु अरजन देव जी सर्वशक्तिमान परमेश्वर की सर्व समर्थता का ज़िक्र करते हुए स्पष्ट करते हैं कि अकाल पुरख सब कुछ करने एवं करवाने वाला है। जो उस मालिक को पसंद है अर्थात् जो उसे अच्छा लगता है वही कुछ होता है। वह क्षण भर में निर्माण तथा विनाश कर देने वाला है अर्थात् उसे स्थापित करने अथवा विध्वंस करने में एक पल का समय भी नहीं लगता। वह क्षणमात्र में कुछ भी सृजित कर सकता है और क्षणमात्र में ही उस बनाए हुए को तहस-नहस कर सकता है। इस सबके लिए उसे किसी विशेष समय या योजना की आवश्यकता नहीं पड़ती।

परिपूर्ण परमात्मा की ताकत का कोई आदि-अंत नहीं अर्थात् उसकी शक्ति और बल अनंत है। परमेश्वर ने इस सृष्टि को अपने हुक्म से पैदा करके बिना किसी आश्रय के टिका रखा है। यह संसार उसके हुक्म में पैदा होता है और हुक्म में ही खत्म हो जाता है अर्थात् उसी के हुक्म से ही संसार की उत्पत्ति होती है और उसी के हुक्म में ही वह फिर से मूल (परमात्मा) में समा जाता है। ऊंच-नीच या छोटे-बड़े का जो पसार हो रहा है वह भी उसी के हुक्म में ही हो रहा है। अनेक तरह के रंग-तमाशे (कौतुक) भी उसी के हुक्म में हो रहे हैं। ईश्वर अपने विचित्र कारनामों को करके स्वयं ही देख रहा है अर्थात् वह सृष्टा भी है और दृष्टा भी। पंचम पातशाह अंतिम पंक्ति में पावन फरमान करते हैं कि पारब्रह्म परमेश्वर सम्पूर्ण रचना में समाया हुआ है अर्थात् वह सर्वव्यापी है।

उपरोक्त पउड़ी सदृश्य भाव जपु जी

२/१०४, जवाहर नगर, जयपुर-३०२००४, मो. ९९२९७-६२५२३

साहिब में भी निहित है, यथा :

हुकमै अंदरि सभु को बाहरि हुकम न कोइ ॥
नानक हुकमै जे बुझै त हउमै कहै न कोइ ॥
(पन्ना १)

अर्थात् प्रत्येक जीव उस मालिक के हुक्म में है, उसके हुक्म के बाहर कोई भी नहीं है। गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि जो कोई उस ईश्वर के हुक्म को जान लेता है, वह फिर अंहकार की बात ही नहीं करता।

हुक्म में रहने वाला जीव अकाल पुरख के चरणों में यही अरदास करता है कि हे प्रभु! तेरी रजा मुझे सदैव अच्छी लगे, यथा :

जो तुधु भावै सोई चंगा इक नानक की अरदासे ॥
(पन्ना ७९५)

इसके विपरीत मनमुख, जो अपनी मति के अनुसार चलते हैं, हमेशा विषय-विकारों के दुख भोगते हैं और प्रभु-दर से बिछुड़ जाते हैं, यथा गुरबाणी-प्रमाण है :

आपणै भाणै जो चलै भाई विछुड़ि चोटा खावै ॥
(पन्ना ६०१)

अत: सब कुछ उसी के हुक्म में घटित हो रहा है। गुरु-कृपा से जो इस रहस्य को समझ लेता है फिर वह कभी उसके हुक्म से आकी नहीं होता तथा हर हाल में उसकी रजा में खुश रहता है।

प्रभ भावै मानुख गति पावै ॥ प्रभ भावै ता पाथर तरावै ॥
प्रभ भावै बिनु सास ते राखै ॥ प्रभ भावै ता हरि गुण भाखै ॥
प्रभ भावै ता पतित उधारै ॥ आपि करै आपन बीचारै ॥
दुहा सिरिआ का आपि सुआमी ॥ खेलै बिगसै अंतरजामी ॥
जो भावै सो कार करावै ॥ नानक द्रिसटी अवरु न आवै ॥२॥

दूसरी पउड़ी में गुरु पातशाह उस परिपूर्ण परमेश्वर की अनंत शक्ति का वर्णन करते हुए फरमान करते हैं कि उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। गुरु पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि अगर ईश्वर चाहे तो जीव उच्च आत्मिक अवस्था पा लेता है अर्थात् जीते-जी मुक्तावस्था का अधिकारी बन जाता है। अगर प्रभु चाहे तो पत्थरों में भी तैरने की सामर्थ्य आ जाती है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि अगर वह चाहे तो पत्थर-दिल इंसान को मोम-दिल बनाकर इस भवसागर से पार उतार देता है। अगर प्रभु चाहे तो वह जीव को बिना श्वासों से भी जीवन-दान दे सकता है अर्थात् श्वासों की पूंजी खत्म हो जाने पर भी ज़िंदा रख सकता है। अगर प्रभु चाहे तो जीव उसके गुणों को धारण कर यश कमाता है अर्थात् उसी की चाहत से जीव को प्रभु-चरणों की बंदगी का सुअवसर नसीब होता है। उसकी रहमत के बिना तो उसका सिमरन भी नहीं किया जा सकता। प्रभु-इच्छा से ही पतित (आचरणहीन) व्यक्तियों का उद्धार हो सकता है अर्थात् चरित्र से गिरे हुए व्यक्तियों को भी परमात्मा चरित्रवान बनाने की सामर्थ्य रखता है। वह जो कुछ भी करता है स्वयं के चिंतन से करता है अर्थात् सब कुछ करने हेतु उसे किसी की सलाह-मशविरे की आवश्यकता महसूस नहीं होती। प्रभु लोक-परलोक का आप ही मालिक है। वह घट-घट की जानने वाला अर्थात् अंतरयामी है। वह जगत-तमाशा आप ही रचता है और आप ही अपने कौतुकों को देखकर प्रसन्न होता है। उसे जो रुचिकर लगता है वह वही करता है अर्थात् उस मालिक को जो कुछ अच्छा लगता है वह

वही कुछ करता है और जीवों से करवाता है। अंतिम पंक्ति में श्री गुरु अरजन देव जी फरमान करते हैं कि उसके अतिरिक्त ऐसा सर्वशक्तिमान अन्य कोई दिखाई नहीं देता। कहने से अभिप्राय, सब कुछ करने व करवाने वाला प्रभु स्वयं ही है। उसकी सत्ता व हुक्म के बिना कहीं कुछ होने की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

उपरोक्त पउड़ी के भाव को लक्षित करने वाले गुरबाणी में अन्यत्र भी अनेक उदाहरण हैं। यहां एक उदाहरण प्रस्तुत है जिससे सहजता से अनुमान लगाया जा सकता है कि उसके हुक्म में कैसे अजब कौतुक देखने में आते हैं, यथा :

सीहा बाजा चरगा कुहीआ एना खवाले घाह ॥
घाहु खानि तिना मासु खवाले एहि चलाए राह ॥
नदीआ विचि टिबे देखाले थली करे असगाह ॥
कीड़ा थापि देइ पातिसाही लसकर करे सुआह ॥
जेते जीअ जीवहि लै साहा जीवाले ता कि असाह ॥
नानक जिउ जिउ सचे भावै तिउ तिउ देइ गिराह ॥ *(पन्ना १४४)*

अर्थात् अगर प्रभु चाहे तो मांसाहारी जीवों को घास खिला दे, घास खाने वाले को मांस खिला दे अर्थात् उनके स्वभाव में गजब की तबदीली ला दे। जहां नदियां हैं, वहां टीले दिखा दे और रेतीले स्थानों को गहरे पानी वाला बना दे। छोटे से कीट को चाहे तो बादशाह बना दे। इसके विपरीत चाहे तो सेनाओं के झुंडों को पल भर में राख कर मिट्टी में मिला दे। जितने भी जीव जीवित हैं वे सांस लेकर ही जीते हैं लेकिन ईश्वर चाहे तो उनमें श्वास लेने की मुहताजी भी न रह जाये। श्री गुरु नानक देव जी फरमान करते हैं कि परमात्मा जैसा चाहता है वैसे-वैसे ही जीवों को रोजी देता है।

उसकी विलक्षण शक्तियों का कोई पारावार नहीं। वह तो जीवों को अचंभित कर देने वाला है। उसकी ताकत का अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता। परमेश्वर अपने हैरतअंगेज़ कारनामों को करके स्वयं उनका अवलोकन करता हुआ प्रसन्न भी हो जाता है। उसे जो भाता है, वही करता है। उसके सिवाय और कोई नहीं जो यह सब करने की क्षमता रखता है।

कहु मानुख ते किआ होइ आवै ॥ जो तिसु भावै सोई करावै ॥
इस कै हाथि होइ ता सभु किछु लेइ ॥ जो तिसु भावै सोई करेइ ॥
अनजानत बिखिआ महि रचै ॥ जे जानत आपन आप बचै ॥
भरमे भूला दह दिसि धावै ॥ निमख माहि चारि कुंट फिरि आवै ॥
करि किरपा जिसु अपनी भगति देइ ॥ नानक ते जन नामि मिलेइ ॥३॥

ग्यारहवीं असटपदी की तीसरी पउड़ी में श्री गुरु अरजन देव जी ने एक प्रश्न किया है कि विचार करो कि मनुष्य अपने आप में क्या करने की क्षमता रखता है? आगे गुरुदेव ने इस तथ्य का स्पष्टीकरण किया है कि जीव के हाथ में कुछ भी नहीं है। कारण, कर्म, साधन तथा साध्य सब की डोर उस मालिक के हाथ में ही है।

पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि बताओ! मनुष्य स्वयं कौन-सा कार्य करने में समर्थ है? वास्तव में जो प्रभु को अच्छा लगता है, वही वह जीव से करवाता है अर्थात् जीव अपने आप कुछ भी करने की क्षमता नहीं रखता। प्रभु जो चाहे जीव में वही योग्यता बख़्शकर करवा सकता है। अगर जीव में सामर्थ्य हो तो वह सब कुछ स्वयं ही संभाल ले (लेकिन ऐसा नहीं है)। प्रभु वही कुछ करता है जो उसे अच्छा लगता है। इस प्रकार स्पष्ट

है कि सब कुछ प्रभु के ही हाथ में है। मूर्खतावश जीव माया के बंधनों में फंस जाता है। विचारने योग्य तथ्य है कि अगर मनुष्य (आध्यात्मिक रूप से) समझदार हो तो वह स्वयं को इस माया के ज़हरी प्रकोप से बचा ले और इसके शिकंजे से बच निकले, लेकिन जीव तो माया के मोह में भ्रमित हुआ माया की ही खातिर दसों दिशाओं में भटकता रहता है। एक पलक के झपकने जितने अल्प समय में इसका चंचल मन चारों कोनों में अर्थात् सर्वत्र घूम आता है, क्योंकि जीव की कल्पना की उड़ान अत्यंत तीव्र है।

अंतिम पंक्ति में गुरुदेव स्पष्ट करते हैं कि इन सबसे बचने के लिए केवल परमेश्वर के नाम का ही सहारा है। प्रभु कृपा करके जिस जीव को अपनी भक्ति बख़्शता है केवल वही व्यक्ति उसकी नाम-भक्ति में स्थिर रहता है। सदैव कायम रहने वाले, माया के प्रभाव से रहित परमेश्वर के नाम में ही सभी सुख समाहित हैं। जिसे वह कृपालु रहमत करके नाम की दात बख़्शता है उसका चंचल मन स्थिर होकर सर्वत्र भटकने से बच जाता है।

गुरबाणी में अन्यत्र भी समझाया गया है कि इस संसार-रचना में सब कुछ है। परमेश्वर की रजा पर निर्भर करता है कि वह किस जीव को किस ओर प्रवृत्त करता है। जीव की अपनी कोई औकात नहीं कि उसकी मर्जी से कुछ हो जाये। गुरबाणी आशयानुसार संसार रूपी वृक्ष को दोनों ही तरह के फल लगे हैं। यह परमेश्वर की मौज है कि वह जीव को किस तरह का फल खिलाता है, यथा :

बिखु अंम्रितु करतारि उपाए ॥ संसार बिरख कउ दुइ फल लाए ॥
आपे करता करे कराए ॥ जो तिसु भावै तिसै खवाए ॥ (पन्ना ११७२)

इस हकीकत को कोई नहीं झुठला सकता कि जिस पर उसका रहमो-कर्म हो जाये परमेश्वर उसे ही अपना अमृतमयी नाम बख़्श कर निहाल कर देता है, यथा गुरबाणी का प्रमाण है :

नानक जिस नो नदरि करेइ ॥ अम्रित नामु आपे देइ ॥ (पन्ना ११७२)

वाहिगुरु रहमत करे तो हम जैसे पापी, कृतघ्न जीवों को भी अमृत रूपी नाम की प्राप्ति हो सकती है।

खिन महि नीच कीट कउ राज ॥ पारब्रहम गरीब निवाज ॥
जा का द्रिसटि कछू न आवै ॥ तिसु ततकाल दह दिस प्रगटावै ॥
जा कउ अपुनी करै बखसीस ॥ ता का लेखा न गनै जगदीस ॥
जीउ पिंडु सभ तिस की रासि ॥ घटि घटि पूरन ब्रहम प्रगास ॥
अपनी बणत आपि बनाई ॥ नानक जीवै देखि बडाई ॥४॥

प्रस्तुत पउड़ी में गुरु पंचम पातशाह ने सर्व-कला-समर्थ पारब्रह्म परमेश्वर की अनंत ताकत का ज़िक्र किया है कि वह प्रभु किस पल क्या से क्या कर दे, यह सोचने की योग्यता भी किसी में नहीं है। उसके अजब कौतुक कल्पना-लोक से भी परे हैं। साथ ही उपरोक्त पउड़ी में जीव के लिए एक गूढ़ संदेश भी निहित है कि जीव कदाचित अपनी किसी भी तरह की प्राप्ति का गुमान न करे और जो नहीं मिला उसका मलाल न करे। न जाने परमात्मा कब किसी को राज बख़्श दे और कब राजा को रंक बना दे। गुरु पातशाह पावन उपदेश दे रहे हैं कि केवल और केवल परमेश्वर की सिफ्त-सलाह

करते रहो, न जाने कब जीव उसकी कृपा का पात्र बन जाये।

पंचम पातशाह पावन फरमान करते हैं कि पारब्रह्म परमेश्वर कीट के समान तुच्छ जीव को क्षण भर में राज बख़्श देता है। परमेश्वर गरीबों पर दया करने वाला है, वास्तव में गरीबों को सम्मान प्रदान करने वाला है। जो जीव किसी की दृष्टि में ही नहीं होता अर्थात् जिसे निर्धनता व तुच्छता के कारण कोई पहचान नहीं मिली होती उसे प्रभु दसों दिशाओं में प्रसिद्ध कर देता है (और यह सब करने में उसे किसी विशेष प्रयोजन की आवश्यकता नहीं होती)। जिस पर उसकी रहमत हो जाए वह चंद लम्हों में विश्व-ख्याति अर्जित कर लेता है। (यही नहीं) जिस पर ईश्वर की रहमत हो जाती है या जिस जीव पर उस मालिक ने बख़्शिश करनी होती है, उसके गुण-अवगुण या सांसारिक कर्मों का लेखा-जोखा भी नहीं पूछा जाता। जीव को मिला यह जीवन, शरीर और प्राणों की पूंजी भी ईश्वर-प्रदत्त है अर्थात् जीव को बेशकीमती मनुष्य-जीवन प्रभु से ही मिला है। प्रत्येक घट (शरीर) में पूर्ण प्रभु का ही प्रकाश है। प्रो. साहिब सिंघ ने इस पंक्ति का अर्थ इस प्रकार से किया है---"प्रत्येक शरीर में प्रभु का ही जलवा है। आगे गुरु पातशाह फरमान करते हैं कि परमेश्वर स्वयं से प्रकाशमान है। उसकी सृजना करने वाला कोई दूसरा नहीं है। गुरु पातशाह उसकी अपार महिमा को देखकर आत्मिक प्रसन्नता प्राप्त कर रहे हैं अर्थात् श्री गुरु अरजन देव जी उसके बढ़प्पन और गौरव को देखकर आत्मिक जीवन का आनंद प्राप्त कर रहे हैं।

"खिन महि नीच कीट कउ राज ॥" इस पावन *पंक्ति के आशय को गुरु नानक पातशाह के समय की एक घटना से जोड़कर समझने का यत्न करें! एक बार श्री गुरु नानक देव जी कलयुगी जीवों का उद्धार करते हुए एक जंगल में पहुंचे। वहां एक गड़रिया भेड़ें चरा रहा था। उसने गुरु पातशाह और भाई मरदाना जी को विचरण करते हुए देखा। वह श्रद्धापूर्वक उनके समीप आया। उसने अपने हाथों से स्थान साफ किया तथा एक चटाई का टुकड़ा बिछाया और विनती की कि आप यहां बैठें। अपनी जेब से थोड़े भुने चने निकाले और स्नेह व आदरपूर्वक उन्हें खाने को दिये। यह श्रद्धा देखकर गुरु पातशाह ने बड़े प्यार से कहा, "आओ, बैठो सुलतान!" गुरु पातशाह के वचन अगले ही दिन पूर्ण हुए। उसे किसी कारणवश वहां का राजा घोषित कर दिया गया।*

गुरबाणी में ऐसे फरमान भी मिलते हैं जब उसकी बख़्शिश से कोई वंचित हो जाता है तो राजा को रंक होने में भी देर नहीं लगती। यही नहीं, सुलतान का भिखारी हो जाना और मांगने पर भीख भी नसीब न होना, ऐसी परिस्थितियां बनते देर नहीं लगती :

नदरि उपठी जे करे सुलताना घाहु कराइदा ॥
दरि मंगनि भिख न पाइदा ॥ (पन्ना ४७२)

हर पल सर्वशक्तिमान परमेश्वर के भय, अदब तथा सत्कार में रहना ही जीव का प्रमुख दायित्व है। उसके भय के बिना भक्ति नहीं हो सकती और भक्ति के बिना आत्मिक शक्ति व रूहानी खुराक नहीं मिल सकती। ۞

गुर सिखी बारीक है--२५

- डॉ. सत्येंद्रपाल सिंघ*

श्री गुरु नानक देव जी को जब लगा कि मानवता को सही दिशा देने का समय आ गया है तो उन्होंने सुलतानपुर लोधी में मोदीखाने की नौकरी छोड़ दी। दिन-रात हरि-सिमरन में लीन रहने लगे। गुरु साहिब के पिता श्री कलिआण दास जी को जब तलवंडी में यह ख़बर मिली तो वे चिंतित हो उठे तथा परिवार में विचार-विमर्श करने के बाद भाई मरदाना जी को यह दायित्व सौंपा कि वे सुलतानपुर लोधी जाकर गुरु नानक साहिब से मिलकर सारी जानकारी लें। भाई मरदाना जी, जिनके परिवार का श्री कलिआण दास जी के परिवार से गहरा सम्बंध था और जो तथाकथित मीरासी जाति से संबंधित थे, तुरंत ही सुलतानपुर लोधी के लिए चल पड़े। वे गुरु नानक साहिब से लगभग दस वर्ष बड़े थे। भाई मरदाना जी गुरु साहिब से मिले और तर्क करने लगे कि उन्होंने मोदीखाने की नौकरी क्यों छोड़ दी? गुरु साहिब ने भाई मरदाना जी को कहा कि यह संसार एक झूठे सपने की तरह है। भाई मरदाना जी पर गुरु साहिब की बातों का गहरा असर हुआ और वे घर-बार छोड़कर इनके साथ रहने को तैयार हो गये, मगर उनके मन में फिर कुछ दुविधा बनी रही। गुरु नानक साहिब ने कहा कि "वही करो जो मन कहता है। मेरे साथ रहना बहुत कठिन है। मेरे साथ रहना है तो सांसारिक पदार्थों की तृष्णा को मारना पड़ेगा। यह तृष्णा संतोष से ही बुझ सकती है। सांसारिक सुख भोगने हैं तो वापिस लौट जाओ।" भाई मरदाना जी के मन पर गुरु साहिब की बातें सीधे असर कर चुकी थीं। जो गुरु साहिब की ख़बर लेने आये थे वे अब अपनी ही ख़बर भूलकर गुरु साहिब की राह चलने को तैयार थे :

अचरु चरै ता सिधि होई सिधी ते बुधि पाई ॥
प्रेम के सर लागे तन भीतरि ता भ्रमु काटिआ जाई ॥१॥
मेरे गोबिद अपुने जन कउ देहि वडिआई ॥
गुरमति राम नामु परगासहु सदा रहहु सरणाई ॥
(पन्ना ६०७)

काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार पर नियंत्रण पा लेने और मन को साध लेने से ज्ञान का प्रकाश हो जाता है। यह तभी संभव है जब मनुष्य पर परमात्मा-प्रेम का प्रभाव हो जाये। प्रेम के तीर तन पर लगते हैं तो सारी दुविधाएं मिट जाती हैं। मन में वैसे ही विचार जन्म लेने लगते हैं जैसे भाई मरदाना जी ने गुरु नानक साहिब की बात मानकर व्यक्त किये थे। भाई संतोख सिंघ के अनुसार भाई मरदाना जी ने कहा कि *"रहौं संगि मैं मन महिं ठानी"* अर्थात् मैंने मन में ठान लिया है कि मैं आपके साथ रहूंगा :

प्रभु जी त्रिसना मन ते मूकी।
आन जानि की आसा चूकी।
तुम समान को नदरि न आवै।
दिनकर पिख खद्योत न भावै ॥५३॥
(श्री गुरू नानक प्रकाश, पूरबार्द्ध-I, अध्याय ३४)

*ई-१७१६, राजाजी पुरम, लखनऊ-२२६०१७, मो: ९४१५९-६०५३३

भाई मरदाना जी के मन में प्रेम की ऐसी ज्योति जागृत हुई कि उनकी सारी तृष्णाएं समाप्त हो गयीं, सारी कामनाएं शांत हो गईं और सत्य-असत्य का भेद स्पष्ट हो गया। जब मन को परमात्मा के प्रेम के तीर बेंध देते हैं तो सांसारिक कामनाएं छोटी लगती हैं। सूर्य (परमात्मा-प्रेम) की रोशनी देखने के बाद ही जुगनू (सांसारिक प्रेम) की रोशनी अर्थहीन समझ आती है। गुरु साहिब का साथ पाकर भाई मरदाना जी *"अपुने जन कउ देहि वडिआई "* अर्थात् महिमामंडित हुए। उनके नाम से उच्चारित किये गये गुरु नानक साहिब के तीन सलोक श्री गुरु ग्रंथ साहिब में अंकित हुए। परमात्मा का प्रेम इतना महान है कि प्रेम करने वाले को भी श्रेष्ठ बना देता है। इसके लिए प्रेम की महानता, उसकी ऊंचाई को देखना और समझना ही परमात्मा से जुड़ना है। जितनी समझ आती जायेगी उतनी ही परमात्मा से निकटता बढ़ती जायेगी। गुरसिक्ख अपनी समझ को निरंतर विकसित करता जाता है ताकि वह सच और झूठ का भेद कर सके। यह समझ शबद-गुरु ही दे सकता है। समझ नहीं तो सुख नहीं :

गुंगा गावि न जाणई बोला सुणै न अंदरि आणै।
अंन्है दिसि न आवई राति अन्हेरी घरु न सिञाणै।
चलि न सकै पिंगुला लूल्हा गलि मिलि हेतु न जाणै।
संढि सुपुती न थीऐ खुसरे नालि न रलीआं माणै।
जणि जणि पुतां माईआं लाडले नांव घरेनि धिङाणै।
गुरसिखी सतिगुरू विणु सूरजु जोति न होइ टटाणै।
साधसंगति गुर सबदु वखाणै ॥ (वार २८:२२)

भाई गुरदास जी कहते हैं कि जैसे गूंगा गाना नहीं जानता, बहरा सुन नहीं सकता, अंधा देख नहीं सकता, घोर अंधकार में अपने घर का पता नहीं लगता, पिंगला चल नहीं सकता, लूला गले मिलने का सुख नहीं जान पाता, बांझ स्त्री संतान नहीं उत्पन्न पर सकती, ...बेटों के अच्छे-अच्छे नाम रखने का कोई लाभ नहीं यदि उनमें गुण न हों, उसी तरह गुरसिक्ख की जीवन-पद्धति गुरु की शिक्षाओं के अनुकूल न हो तो व्यर्थ है। स्वयं की बुद्धि जुगनू के प्रकाश की तरह है और गुरमति सूर्य का प्रकाश है। जीवन की समझ और गति सतिगुरु की शरण में ही है।

श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी की रहनुमाई में जब सिक्ख योद्धा अनंदपुर साहिब में पहाड़ी राजाओं और शाही सेना से जूझ रहे थे तब भाई घनईया जी गुरु-दर्शन के लिए वहां पहुंचे। वे प्राय: युद्ध के मैदान में मशक लेकर घायलों को पानी पिलाते दिखाई देते। भाई घनईया जी प्रेम और करुणावश बिना किसी भेदभाव के सभी को पानी पिलाते थे। सिक्खों को यह बात गहरी नागवार गुजरी, जिसकी शिकायत उन्होंने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी के पास की। गुरु साहिब ने जब भाई घनईया जी से इस बारे में पूछताछ की तो भाई घनईया जी ने विनम्रता से कहा कि मैं तो बस, आपको देखता हूं। आपको मैं सिक्खों में देखता हूं , आपको मैं शत्रुओं में देखता हूं, इसलिए मैं सबकी सेवा कैसे न करूं? गुरु साहिब भाई घनईया जी की बात सुनकर बड़े खुश हुए और बोले कि भाई घनईया जी ने गुरबाणी को सही ढंग से समझा है। श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी ने उन्हें मरहम और पट्टी देकर घायलों की सेवा का सम्पूर्ण कार्य करने का आदेश दिया।

प्रेम के तीर जब मन पर लगते हैं तो मन प्रेममय हो जाता है।

तूं मेरी नव निधि तूं भंडारु ॥
रंग रसा तूं मनहि अधारु ॥
तूं मेरी सोभा तुम संगि रचीआ ॥
तूं मेरी ओट तूं है मेरा तकीआ ॥ (पन्ना १८१)

ऐसा कब होता है? जब किसी का प्रेम पाने से लगे कि संसार भर की रिद्धियां, सिद्धियां, नव निधियां अर्थात् अथाह खज़ाना मिल गया है; जब प्रेम-रस ऐसा सराबोर कर दे कि वह मन का आधार बन जाये; जब प्रेम में ही सारी शोभा प्रतीत होने लगे और प्रेम में मन रच-बस जाये; जब प्रेम शरण बन जाये और मन की चंचलता शांत हो जाए। ऐसा निश्चय ही परमात्मा के प्रेम में हो सकता है जिसे पाने के लिए भाई घनईया जी जैसी दृष्टि का होना आवश्यक है।

जब सर्वत्र एकरूप पारब्रह्म दिखने लगे और भाई मरदाना जी जैसी ललक जन्म ले ले तो लाखों मील के ऊबड़-खाबड़ रास्तों, पहाड़ों, दुर्गम जंगलों की यात्रा में भूख-प्यास, दुख सहते हुए भी साथ छोड़ने का विचार मन में नहीं आता। भाई मरदाना जी ने गुरु नानक साहिब को और भाई घनईया जी ने श्री गुरु गोबिंद सिंघ जी को अपना स्वामी मान लिया था :

तू बेअंतु पारब्रहम सुआमी गति तेरी जाइ न लाखी ॥
चरन कमल प्रीति मनु बेधिआ करि सरबसु अंतरि राखी ॥ (पन्ना १२२७)

गुरसिक्ख वह है जो पारब्रह्म को अथाह गुणों और शक्ति का धारक समझकर उसे अपना स्वामी बना लेता है। वह पारब्रह्म की व्यापकता को अकथ्य मानता है और अपनी बुद्धि को तुच्छ मानकर उसका दास बन जाता है। जो अनंत है, अथाह है और शब्दों की परिभाषा से परे है, उससे तर्क नहीं किया जा सकता। उसकी रचना, उसकी कृत पर कोई प्रश्न नहीं किया जा सकता। उसे बस, स्वीकार किया जा सकता है। किसी की अधीनता स्वीकार करने में पांच विकार आड़े आते हैं। जब तक विकार हैं तब तक परमात्मा को सम्पूर्णता में स्वीकार करना संभव नहीं है। इसका उपाय वही है जो गुरु नानक साहिब ने भाई मरदाना जी को दिया था-- **'संतोष'**। मन में संतोष आने से विकार जाते रहते हैं। संतोष बना रहे, इसके लिए परमात्मा-प्रीति को, जिसने मन को बेंधा है, अंतर में अति सहेज कर रखना पड़ता है।

गुरु साहिबान ने मन की गति को भली-भांति समझा था और समझाया भी। मन एक पल स्थिर है, परमात्मा में रम गया है, रस-विभोर हो गया है, किंतु अगले पल फिर चंचल हो उठा है। परमात्मा का रस जाता रहा है और सांसारिक रसों के अंकुर फूट पड़े हैं। पलों का यह द्वंद्व सभी के जीवन में निरंतर चलता रहता है, जिससे कभी भले, कभी बुरे कार्य होते रहते हैं; कहीं धर्म है, कहीं अधर्म है; कहीं धर्म और अधर्म की आंख मिचोली है। गुरबाणी में प्रेम की शाब्दिक चर्चा नहीं की गयी। इसे मन से न केवल जोड़ा गया बल्कि मन के प्रेम से बिंधने की बात और उसे पूरे यत्न से सहेज कर रखने की बात की गयी है। मन में बस, परमात्मा के प्रेम, दृष्टि में बस, परमात्मा के स्वरूप की बात की गयी है। अन्य सारे मोह, विचार छोड़ने पड़ते हैं। परमात्मा तब कृपा करता है, अपने प्रेम के तीर से मन को बेंध देता है। यह बस, परमात्मा का भेद है कि कब, कैसे हो जाता है।

श्री गुरु अमरदास जी पहले वैष्णव धर्म के अनुयायी थे। प्रत्येक वर्ष वे गंगा-यात्रा पर जाते थे। यह क्रम बीस वर्षों से चल रहा था। वे श्री गुरु नानक देव जी द्वारा चलाये गये मिशन से भी भली-भांति परिचित थे। श्री गुरु अगंद देव जी की सुपुत्री उनके छोटे भाई के पुत्र की पत्नी थी। अपने वैष्णव मत का पालन करने के दौरान एक दिन भोर में उनके कानों में गुरबाणी के वे मीठे शब्द पड़े जो श्री गुरु अंगद देव जी की सुपुत्री बीबी अमरो जी गा रही थीं :

करणी कागदु मनु मसवाणी बुरा भला दुइ लेख पए ॥
जिउ जिउ किरतु चलाए तिउ चलीऐ
तउ गुण नाही अंतु हरे ॥१॥
चित चेतसि की नही बावरिआ ॥
हरि बिसरत तेरे गुण गलिआ ॥१॥ रहाउ ॥
जाली रैनि जालु दिनु हुआ जेती घड़ी फाही तेती ॥
रसि रसि चोग चुगहि नित फासहि छूटसि मूड़े कवन गुणी ॥२॥
काइआ आरणु मनु विचि लोहा पंच अगनि तितु लागि रही ॥
कोइले पाप पड़े तिसु ऊपरि मनु जलिआ संन्ही चिंत भई ॥३॥
भइआ मनूरु कंचनु फिरि होवै जे गुरु मिलै तिनेहा ॥
एकु नामु अंम्रितु ओहु देवै तउ नानक त्रिसटसि देहा ॥४॥ *(पन्ना ९९०)*

उपरोक्त गुरबाणी-पंक्तियां कानों में पड़ते ही श्री गुरु अमरदास जी का व्यग्र मन अचानक शांत हो गया। उन्होंने निश्चय कर लिया गुरु-शरण में जाने का, क्योंकि मन पर गुरु-प्रेम के तीर लग चुके थे। यह अवस्था जो उक्त गुरु-वचन में दर्शायी गयी है, बहुतों की है। मनुष्य दिन-रात माया के जाल में फंसकर पल-पल अपने जीवन को व्यर्थ गंवा रहा है, दुष्कर बना रहा है; सांसारिक रसों के स्वाद में पड़कर वह नित्य ही अपनी कठिनाइयां बढ़ा रहा है। उसे यह नहीं पता कि इन कठिनाइयों से कैसे पार जाना है। शरीर एक तरह से भट्ठी बन गया है जिसमें लोहे के समान कठोर मन पड़ा है। इसे काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की अग्नि जला रही है। इस भट्ठी में नित्य किये जाने वाले पाप कोयले की तरह सड़ रहे हैं और चिंताओं की धौंकनी उन्हें बराबर हवा दे रही है। मन स्याही की तरह है और हमारे कर्म कागज़ की तरह हैं; जिस पर बुरे-भले लेख लिखे जा रहे हैं। अब मन यदि पांच विकारों की अग्नि में तप रहा है तो लेख भी उसी के अनुकूल होंगे। मनुष्य समझ ही नहीं पाता कि उसके साथ क्या हो रहा है और वह क्या करे। उसके कर्म ही उसके जीवन की दिशा तय करते रहते हैं। वास्तव में जो गुण उसे अच्छे कर्मों के लिए चाहिए वे तो परमात्मा से ही मिल सकते हैं। यदि वह सतिगुरु की ओट ले तो मन सोने का हो जायेगा और तन सुकर्मों की ओर अग्रसर हो जायेगा। परमात्मा का अमृत रूप नाम जीवन के सारे भटकाव मिटा देता है।

गुरसिक्ख नित्तनेम पर दृढ़ रहे, साधसंगत करे, गुरु-शबद से जुड़ा रहे, इस आशा में कि न जाने कब उसके मन पर परमात्मा-प्रेम के तीर लगकर उसके मन को प्रेम-रस से सराबोर करके लोहे से कंचन बना दें। वह सदा सतिगुरु पर कुर्बान जाये :

वारी मेरे गोविंदा वारी मेरे पिआरिआ
हउ तुधु विटड़िअहु सद वारी जीउ ॥
मेरै मनि तनि प्रेमु पिरंम का मेरे गोविंदा
हरि पूंजी राखु हमारी जीउ ॥ *(पन्ना १७४)*



शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अध्यक्ष साहिबान : ९

जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके

*-स. रूप सिंघ**

गुरु-ग्रंथ तथा गुरु-पंथ को रोम-रोम से समर्पित, गुरु-पंथ की सबसे ज्यादा सम्मानित पदवियां--- श्री अकाल तख़्त साहिब के जत्थेदार तथा शिरोमणि गु. प्र. कमेटी, श्री अमृतसर के अध्यक्ष पद पर एक ही समय पर विराजमान होने वाली सिक्ख शख़्सियत जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके का सिक्ख इतिहास में विलक्षण स्थान है। दूरदर्शी, ईमानदार, तजुर्बेकार, सफल सिक्ख प्रशासक तथा प्रबंधक, सिक्ख नीतिवान नेता जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके का जन्म २५ दिसंबर, १८९८ ई को सम्मानित सिक्ख परिवार, स. टहिल सिंघ तथा माता गंगा देवी के घर गांव नागोके, श्री अमृतसर में हुआ। जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के बुजुर्ग महाराजा रणजीत सिंघ की सेना में सेवा करते रहे थे। इन्होंने आरंभिक विद्या खडूर साहिब से प्राप्त कर आठवीं कक्षा का इम्तिहान गुरु तेग बहादर स्कूल, बाबा बकाला से पास किया। सन् १९१८ ई में दसवीं कक्षा खालसा कालेजियेट हाई स्कूल, श्री अमृतसर से कर ज़िलाधिकारी कार्यालय, श्री अमृतसर में लिपिक पद पर भर्ती हो गए। पंथ-प्रस्त शख़्सियतों की संगत सदका पंथक जज़्बे व कौमी प्यार में रंगे गए। जलियांवाला बाग तथा ननकाणा साहिब के खूनी साके ने जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के मन पर गहरे जख़्म किए। पीड़ित मानसिकता को दर्शाने के लिए ये अमृतधारी होकर काली दसतार सजाने लगे। काली दसतार उस समय अंग्रेज सरकार के विरोध में अकाली रोष व आक्रोश का प्रतीक बन चुकी थी। जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके अंग्रेज हकूमत की नौकरी को मज़बूरी तथा गुलामी समझने लग गए। बस फिर क्या था, ६ फरवरी, १९२४ ई को सरकारी ज़ंजीर को तोड़कर अकाल के पुजारी आज़ाद अकाली बन गए। २१ फरवरी, १९२४ ई को पहले शहीदी जत्थे में शामिल होकर गंगसर जैतो पहुंचे, जहां अंग्रेज हाकिमों ने शहीदी जत्थे पर गोलियों की बौछार की। शहीदी जत्थे के कुछ सिंघ शहीद हो गए। जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके की टांग में गोली लगने के कारण ये गंभीर रूप से जख़्मी हो गए और इनको अस्पताल दाख़िल होना पड़ा। देखो, इन जांबाज अकाली सिक्ख सरदारों का धैर्य, भरोसा तथा गुरु के प्रति इनकी निष्ठा! जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके स्वस्थ होकर चौथे शहीदी जत्थे में १० अप्रैल, १९२४ ई को पुन: शामिल हुए। इनको गिरफ्तार करके बंदी बना लिया गया। २७ जुलाई, १९२५ ई को ये अंग्रेज हकूमत की कैद से आज़ाद हुए। इनके घर दो पुत्र एवं दो पुत्रियां पैदा हुईं। एक पुत्री खडूर साहिब क्षेत्र से एम. एल. ए भी बनी।

अकाली लहर के समय जून, १९२६ ई में गुरुद्वारा प्रबंध पूरी तरह से पंथक हाथों में आने पर इनकी निष्काम सेवा तथा कुर्बानी को सम्मुख रखते हुए इन्हें गुरुद्वारा सेवा में लिपिक पद पर भर्ती कर लिया गया। इनकी ईमानदारी, सेवा-भावना तथा समर्पित स्वभाव को देखकर

**सचिव, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर-१४३००६, मो: ९८१४६-३७९७९*

मुखतारे-आम से सुप्रिंटेंडेंट शिरोमणि गु. प्र. कमेटी पदोन्नत किया गया। देश की आज़ादी लहर में हिस्सा लेने के लिए इन्होंने अपनी पदवी से छुट्टी लेकर १२ मार्च, १९३० ई को सिविल न-फरमानी तथा स्वदेशी लहर के तहत लाहौर में गिरफ्तारी दी। इन्होंने तीन महीने अटक तथा बरेस्टल की ज़ेल में बंदी बनना प्रवान किया।

सन् १९३१ ई में जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके को तरक्की देकर ज्ञानी गुरमुख सिंघ मुसाफिर, जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब के साथ उप-जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब नियुक्त किया गया। १० मार्च, १९३४ ई को शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की जनरल एकत्रता के समय ज्ञानी गुरमुख सिंघ मुसाफिर तथा जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके की सेवाओं की प्रशंसा का विशेष प्रस्ताव पारित किया गया। ठीक चार वर्ष के बाद १० मार्च, १९३८ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के समय ज्ञानी गुरमुख सिंघ मुसाफिर की तज़वीज़ पर भाई साहिब भाई मोहन सिंघ नागोके को जत्थेदार, श्री अकाल तख़्त साहिब की सम्मान्य पदवी पर विराजमान किया गया। निष्काम सेवा, नि:स्वार्थ स्वभाव तथा गुरु-पंथ को समर्पित भावना के कारण जत्थेदार साहिब ने यह सेवा निरंतर सन् १९५२ ई तक निभाकर नया कीर्तिमान स्थापित किया।

३० दिसंबर, १९३२ ई को इनके उद्यम का सदका अकाली मार्किट, श्री अमृतसर तैयार होनी शुरू हुई। सन् १९३७ ई में लगे कृपाण के मोर्चे के समय जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके ने १०० सिंघों सहित पहले जत्थे में गिरफ्तारी दी। सन् १९३८ ई में श्री अकाल तख़्त साहिब के पीछे शहीदी मार्किट जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के समय ही तामीर हुई। २८ अक्तूबर, १९३९ ई को जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके की ताईद पर मुसलमान वज़ीरों का हस्तक्षेप रोकने के लिए प्रस्ताव पेश किया तथा पास हुआ। २२ फरवरी, १९४१ ई को जनरल इजलास के समय गुरुद्वारा एक्ट में संशोधन सुझाने के लिए ७-सदस्यीय कमेटी बनाई गयी, जिसके जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके सदस्य थे।

१९ नवंबर, १९४४ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जनरल इजलास के समय जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके को सर्व-सम्मति से अध्यक्ष चुन लिया गया। जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके जत्थेदार श्री अकाल तख़्त साहिब की आदृत पदवी के साथ-साथ २८ मई, १९४८ ई तक अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के जिम्मेदारी वाले महत्त्वपूर्ण पद पर भी विराजमान रहे।

जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के अध्यक्षता-काल के समय निम्नलिखित विशेष कार्य हुए :-

इनकी जत्थेदारी व अध्यक्षता के समय सिक्ख सैद्धांतिक, सार्थकता, पंथक शक्ति एवं एकता को रूपमान करती 'सिक्ख रहित मर्यादा' निर्धारित करके लागू करने का ऐतिहासिक फैसला हुआ। गुरुद्वारा कानून को संशोधित करवाकर ऐतिहासिक महत्ता वाले बड़े गुरुद्वारे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के सीधे प्रबंध तले लाए गए जिससे शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की आर्थिक स्थिति व शक्ति में बढ़ोतरी हुई। श्री अमृतसर सरोवर की परिक्रमा को चौड़ा करने के लिए साथ लगती इमारतें तथा बुंगे खरीद करने एवं सिक्ख भवन कला के अनुसार दर्शनी ड्योढ़ियां तैयार करने का कार्य जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के उद्यम सदका आरंभ हुआ। कथित अछूतों में गुरसिक्खी प्रचार

की नयी स्कीम लागू करने के लिए फैसला किया गया। अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के काल के दौरान भी जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके अमृत-संचार समागमों में पांच प्यारों की सेवा निभाते रहे। देश-विभाजन के समय पीड़ित परिवारों की जो टहल-सेवा तथा हिफाजत जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके ने की, वह विलक्षण मिसाल है। १० मार्च, १९४५ ई को सिक्ख कौम की धार्मिक शैक्षणिक, आर्थिक, शारीरिक तथा सांसारिक हालत ज्यादा अच्छी करने के लिए छः-वर्षीय प्रोग्राम बनाया गया कि १९५१ ई की जनगणना तक सिक्खों की गिनती एक करोड़ करनी, ५ लाख नये सिक्खों को दस गुरु साहिबान के नाम तथा जपु जी साहिब कंठस्थ करवाना, गुरुद्वारों में कथा का पुरातन रिवाज शुरू करना तथा श्री अमृतसर शहर में ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन कायम करना, ५ लाख सिक्खों से शराब छुड़वाना, सिक्ख इतिहास की खोज के लिए बड़े पैमाने पर रेफ्रेंस लायब्रेरी बनाना आदि को अमल में लाने का संकल्प लिया गया तथा विद्या के प्रसार-कार्य के लिए यूनीवर्सिटी स्थापित करने का सपना भी लिया। पतित सिक्ख विद्यार्थियों को सिक्ख स्कूलों से निकालने का फैसला किया गया ताकि रहित में आ रही ढील को रोका जाए। गुरुद्वारा जन्म-स्थान श्री गुरु अंगद देव जी, मत्ते दी सरां, गुरुद्वारा टिब्बी साहिब, श्री मुकतसर साहिब के नव-निर्माण तथा शहीदों की यादगार बनाने का कार्य करने का सौभाग्य भी इनको प्राप्त हुआ। देश-विभाजन के समय शेखूपुरा, सच्चा, सौदा, ननकाणा साहिब तथा जड़ां वाली के पीड़ितों की इन्होंने बहुत मदद की।

जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके की अध्यक्षता के समय ९ मार्च, १९४६ ई को जनरल एकत्रता के समय सिक्ख स्टेट की स्थाप्ति का प्रस्ताव पारित किया गया कि "शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी एलान करती है कि सिक्ख अपने आप में विलक्षण कौम है। सिक्खों के मुख्य धर्म-स्थानों, सभ्याचार, सिक्ख रिवाज़ों की स्थाप्ति, सिक्ख स्वाभिमान तथा आज़ादी की रखवाली एवं भविष्य में सिक्खों की तरक्की के लिए सिक्ख स्टेट ज़रूरी है।" स. अमर सिंघ (दुसांझ) ने प्रस्ताव की ताईद करते हुए कहा--- "हमें धोखा देने के लिए यह आवाज़ उठाई जाती है कि सिक्ख एक बड़े हिंदू वृक्ष की शाखा हैं। यह आवाज़ सिर्फ हमको हड़प करने के लिए उठाई जाती है। हम किसी अन्य कौम के गुलाम होकर कभी भी फल-फूल नहीं सकते।..."

आज़ाद हिंद फौज के सिपाहियों की रिहायी तथा सहायता के लिए प्रस्ताव शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा २६ अक्तूबर, १९४६ ई को पारित किया गया। खडूर साहिब में श्री गुरु अंगद देव जी के नाम पर स्कूल बनाया। सन् १९४८ ई में पंजाबियों को अंडमान-निकोबार टापू पर बसाने के लिए बने कमीशन के चेयरमैन जत्थेदार नागोके ही थे।

२८ मई, १९४८ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के इज़लास के समय जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके नामज़द-सदस्य के रूप में हाजिर हुए। जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके पछड़ी श्रेणियों की भलाई के लिए बनी ९-सदस्यीय कमेटी के सदस्य थे। इनकी जत्थेदारी के समय ही हुकमनामा जारी किया गया कि प्रत्येक अमृतधारी प्राणी-मात्र के साथ बराबर का व्यवहार किया जाए। इनकी अध्यक्षता तथा जत्थेदारी के समय अलीगढ़ में भारी अकाली कान्फ्रेंस के समय रिकार्ड-तोड़ अमृत-संचार हुआ।

सन् १९५२ ई में जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके ने जत्थेदार की सम्मान्य पदवी से अपनी इच्छा से त्याग-पत्र दे दिया। इसके साथ ही इन्होंने विधान सभा क्षेत्र तरनतारन से चुनाव लड़ा तथा एम. एल. ए बन गए। सन् १९५८ ई में ही जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके पंजाब सुबार्डीनेट सर्विस बोर्ड के सदस्य चुने गए। २५ सितंबर, १९६३ ई को जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके ने सुबार्डीनेट सर्विस बोर्ड की सदस्यता से त्याग-पत्र दे दिया। सन् १९६८ ई में जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके विधान सभा क्षेत्र खडूर साहिब से विधान सभा के सदस्य चुने गए तथा असेंबली की एस्टीमेट एवं अकाऊंट्ज़ व रूल्ज़ कमेटी के सदस्य बने।

सन् १९६८ ई में जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के दिमाग की नाड़ी फट गयी। इनकी तंदरुस्ती के लिए बहुत प्रयत्न किए गए, परंतु हमेशा पंथ का भला सोचने व चाहने वाली शख़्सियत ३ मार्च, १९६९ ई को शरीर त्यागकर हम सबको सदा के लिए बिछोड़ा दे गयी। २३ मार्च, १९६९ ई को शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने जत्थेदार मोहन सिंघ नागोके के अकाल चलाना कर जाने पर अफ़सोस का प्रस्ताव पारित किया। इनकी तसवीर सिक्ख संग्रहालय में सुशोभित है।



आज़ाद भारत के माथे पर कलंक. . . *(पृष्ठ ३० का शेष)*

गए। उनकी माताएं, बहनें, पत्नियां, बच्चे आदि कई वर्षों के बाद भी उनका इंतजार करते रहे और गम का जीवन जीने को मज़बूर हो गये। जैसे-जैसे उनकी इंतजार लंबी होती गई, उनके दुखों में वृद्धि होती गई। सिवाय रोने और दुख का प्रगटावा करने के कुछ हासिल नहीं हुआ।

श्री अकाल तख़्त साहिब पर हुए फौजी हमले के विरुद्ध रोष के रूप में बहुत से सिक्खों ने उनको मिले मान-सम्मान (अवार्ड) वापिस कर दिए। कुछ ने तो अपने पदों से ही त्याग-पत्र दे दिया। स. खुशवंत सिंघ ने इस दुखद घटना के कारण सबसे पहले अपना 'पदम भूषण' अवार्ड वापिस कर दिया। इसके साथ ही राज्य सभा में अपने क्रोध भरे भाषण द्वारा समय के उन हाकिमों को भी खूब फटकारा। विश्व-प्रसिद्ध क्रिकेट खिलाड़ी स. बिशन सिंघ (बिदी) ने स. खुशवंत सिंघ का समर्थन करते हुए यह बात कही कि यदि वे स. खुशवंत सिंघ के स्थान पर होते तो वे भी ऐसा ही करते। डॉ. गंडा सिंघ (प्रसिद्ध इतिहासकार), स. साधू सिंघ हमदर्द (संपादक, रोजाना अजीत), भगत पूरन सिंघ ने राष्ट्रपति को रोष स्वरूप अपने 'पदम भूषण' और 'पदम श्री' अवार्ड वापिस कर दिए।

श्री अकाल तख़्त साहिब की पवित्र इमारत को भारतीय फौज ने भारी नुकसान पहुंचाया। बाद में केंद्र सरकार ने अपने राज मज़दूरों द्वारा गिरे हुए हिस्से का पुनर्निर्माण करवाना शुरू किया, परंतु पंथक जत्थेबंदियों ने उसे स्वीकार नहीं किया। पांच सिंघ साहिबान, शिरोमणि अकाली दल और शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मिले-जुले फैसलों के अनुसार श्री अकाल तख़्त साहिब की नई इमारत का निर्माण किया गया।





अमेरिका सरकार वहां बसते सिक्ख भाईचारे की सुरक्षा निश्चित बनाए : जत्थे. अवतार सिंघ

श्री अमृतसर : ९ मई – कैलीफोर्निया के शहर फरैस्नो में स्थित गुरुद्वारा साहिब में सेवा करके बाहर आ रहे ८२-वर्षीय स. पिआरा सिंघ पर गिलबर्ट गारसिया नाम के गोरे व्यक्ति द्वारा नसली भेदभाव के तहत किए गए हमले की जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गु. प्र. कमेटी ने सख़्त निंदा करते हुए अमेरिका सरकार से अपील की है कि वहां बसते सिक्ख भाईचारे की सुरक्षा को निश्चित बनाया जाए।

कार्यालय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से जारी प्रेस रिलीज में जत्थेदार अवतार सिंघ ने कहा कि दुनिया के सबसे बड़े देश में इस घटना से पहले भी कई बार नसली भेदभाव के तहत सिक्ख भाईचारे पर हमले हो चुके हैं, जो गंभीर चिंता का विषय हैं। उन्होंने कहा कि सिक्ख भाईचारे के लोगों ने सख़्त मेहनत करके जहां अपने कारोबार स्थापित किए हैं वहां अमेरिका की तरक्की में भी हर पक्ष से अहम योगदान डाला है।

उन्होंने कहा कि नफ़रत फैलाने वाले लोगों का कोई धर्म नहीं होता। ऐसे लोगों को सख़्त सज़ा दी जानी चाहिए ताकि आगे से कोई भी व्यक्ति किसी जात-पात या धर्म के आधार पर हिंसा का शिकार न बने। उन्होंने कहा कि परमात्मा के सम्मुख अरदास है कि स. पिआरा सिंघ जल्द स्वस्थ होकर अपने परिवार में रहें।

सज्जन कुमार को बरी किए जाने के विरोध में रोष मार्च निकाला गया

श्री अमृतसर : ४ मई-- नवंबर, १९८४ ई में दिल्ली तथा अन्य राज्यों में सिक्ख कत्लेआम करवाने के मुख्य दोषी सज्जन कुमार को कड़कड़डूमा अदालत द्वारा बरी किए जाने के विरोध में जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के निर्देश पर शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी की कार्यकारिणी के सदस्य स. रजिंदर सिंघ महिता तथा सचिव स. दलमेघ सिंघ के नेतृत्व में मुख्यालय शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी (स. तेजा सिंघ समुंदरी हाल) से शहर के हाल गेट तक विशाल रोष मार्च निकाला गया तथा हाल गेट चौराहे पर धरने के रूप में बैठ कर 'सतिनाम वाहिगुरू' का सिमरन किया गया। इस विशाल रोष मार्च में शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के अधिकारियों-कर्मचारियों के अलावा बड़ी संख्या में सिक्ख संगत ने भाग लिया।

कैंसर के मरीजों के इलाज के लिए हर संभव कोशिश की जाएगी

श्री अमृतसर : १० मई-- शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के मुख्यालय में कार्यकारिणी कमेटी की एकत्रता में गुरुद्वारा प्रबंध सम्बंधी लिए गए अहम फैसलों के अलावा श्री गुरु

रामदास अस्पताल, वल्ला (श्री अमृतसर) में कैंसर यूनिट में लगभग बारह करोड़ की लागत से लगनी वाली लीनियर एक्सीलेटर मशीन की खरीद के लिए सहायता राशि मंजूर की गई।

जत्थेदार अवतार सिंघ, अध्यक्ष, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने बताया कि बारह करोड़ कीमत वाली इस मशीन के क्रय हेतु श्री दरबार साहिब, श्री अमृतसर से चार करोड़ की सहायता राशि देने को स्वीकृति दी गई है। उन्होंने बताया कि इस मशीन से कैंसर के मरीज की रेडियो थेरेपी कैंसर वाली जगह पर ही की जा सकती है। उन्होंने बताया कि कैंसर के मरीजों के इलाज के लिए हर संभव कोशिश की जाएगी। उन्होंने और जानकारी देते हुए बताया कि श्री गुरु रामदास मेडिकल कालेज, वल्ला में बहुत जल्दी एम. बी. बी. एस. की सीटें १०० से बढ़कर १५० हो जाएंगी।

द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स का परिणाम घोषित

श्री अमृतसर : ७ मई - शिरोमणि गु. प्र. कमेटी की धर्म प्रचार कमेटी द्वारा करवाए जा रहे द्वि-वर्षीय सिक्ख धर्म अध्ययन पत्राचार कोर्स के अंतर्गत जिन विद्यार्थियों ने जनवरी, २०१३ ई. में पहले व दूसरे वर्ष की परीक्षा दी थी, उसका परिणाम कार्यालय पत्राचार कोर्स में स. सतबीर सिंघ सचिव, धर्म प्रचार कमेटी तथा स. भुपिंदरपाल सिंघ, उप सचिव ने एलान किया।

कार्यालय शिरोमणि गु. प्र. कमेटी से जारी प्रेस रिलीज में जानकारी देते हुए स. सतबीर सिंघ ने बताया कि इस कोर्स में दूसरे वर्ष के विद्यार्थी भाई कुलविंदर सिंघ पुत्र स. पूरन सिंघ, निवासी तरनतारन (पंजाब) ने ४०० में से ३४३ अंक लेकर पहला स्थान; बीबी परमजीत कौर पुत्री स. तीरथ सिंघ, निवासी खरगोन (मध्य प्रदेश) ने ३४२ अंक लेकर द्वितीय स्थान और बीबी प्रभजीत कौर, निवासी खरगोन (मध्य प्रदेश) ने ३४१ अंक लेकर तीसरा स्थान प्राप्त किया है।

पत्राचार कोर्स में सत्र २०१२-१३ के लिए दिलचस्पी दिखाते हुए देश-विदेश के विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में दाख़िला प्राप्त किया। जनवरी, २०१३ ई. में ली गई वार्षिक परीक्षा के दौरान लगभग ३३०० विद्यार्थियों ने इम्तिहान में भाग लिया। विद्यार्थियों ने अच्छी कारगुज़ारी दिखाते हुए अच्छे अंक प्राप्त किए हैं जो संस्था के लिए गर्व वाली बात है।

उन्होंने कहा कि शिरोमणि गु. प्र. कमेटी के अध्यक्ष जत्थेदार अवतार सिंघ ने यह कोर्स करने के प्रति संगत को और उत्साहित करने के लिए उत्तीर्ण विद्यार्थियों जो पहले, दूसरे तथा तीसरे स्थान पर आए हैं, को क्रमश: ७१००, ५१०० तथा ३१०० रुपए नकद राशि ईनाम के रूप में तथा मैरिट में ८० प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को ११००-११०० रुपए देकर सम्मानित करने का फैसला किया है।

इस अवसर पर प्रो: सुखदेव सिंघ, इंचारर्ज, पत्राचार कोर्स विभाग, स. अमरजीत सिंघ रीसर्च स्कॉलर के अतिरिक्त अन्य विभागीय कर्मचारी उपस्थित थे।

प्रिंटर व पब्लिशर स. दलमेघ सिंघ ने गोल्डन आफसेट प्रेस, गुरुद्वारा रामसर साहिब, श्री अमृतसर से छपवा कर मालिक शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी के लिए कार्यालय, शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, श्री अमृतसर से प्रकाशित किया। प्रकाशित करने की तिथि : ०१-०६-२०१३